अंक: 29
सितंबर-दिसंबर
2021

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

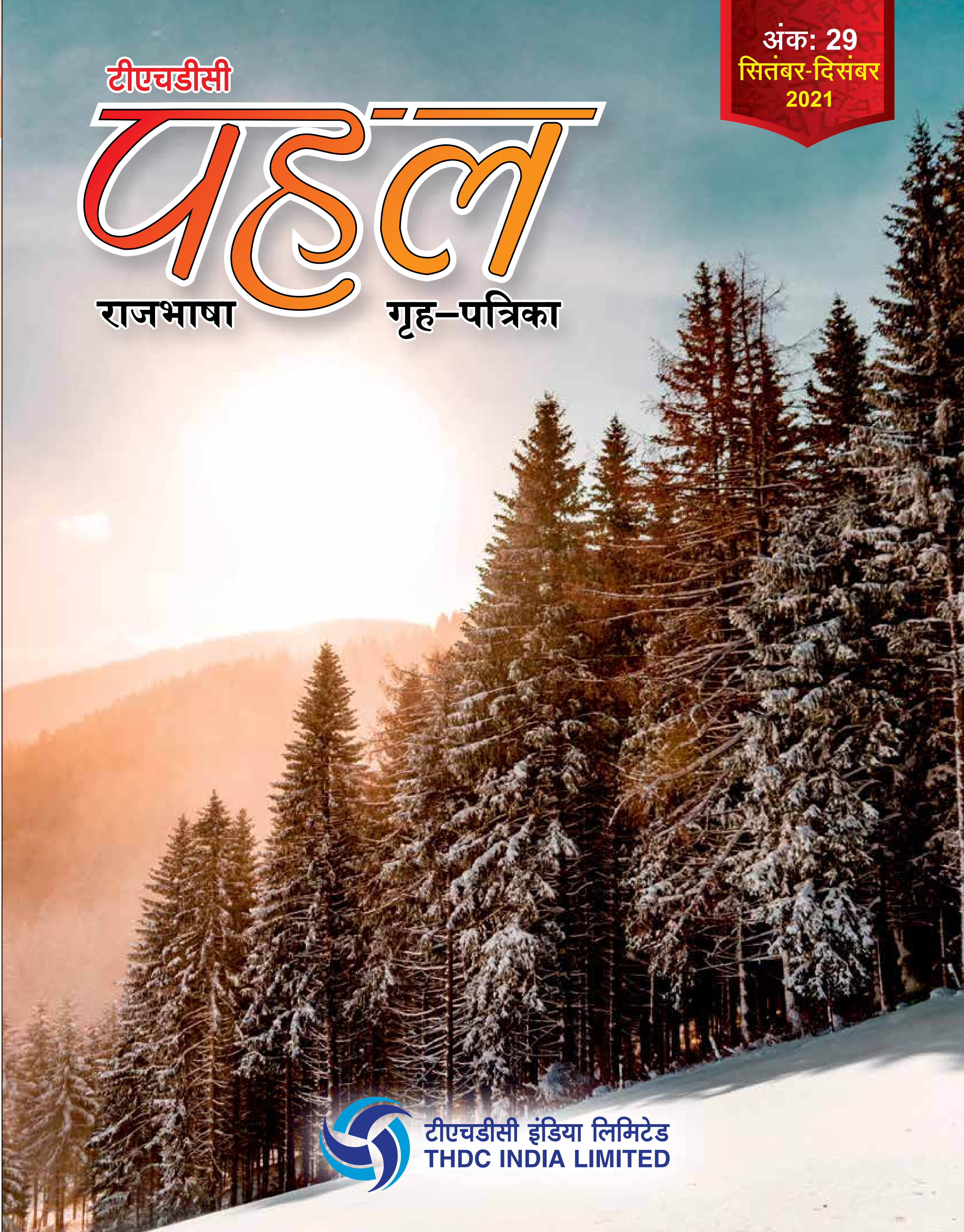

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

साहित्यकार परिचय

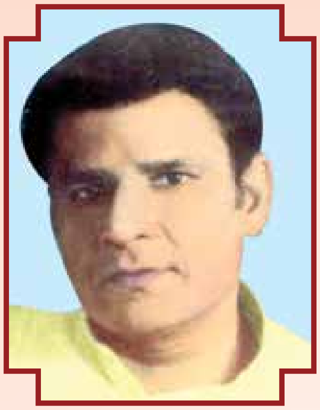

दुष्यंत कुमार

कवि दुष्यंत का जन्म 01 सितंबर, 1933 में उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के नवादा गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम भगवत सहाय और माता का नाम रामकिशोरी देवी था। प्रारंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला तथा माध्यमिक शिक्षा नहटौर (हाईस्कूल) और चंदौसी (इंटरमीडिएट) से हुई। दसवीं कक्षा से कविता लिखना प्रारंभ कर दिया। इंटरमीडिएट करने के दौरान ही राजेश्वरी कौशिक से उनका विवाह हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में बी.ए. और एम.ए. किया। उन्हें डॉ. धीरेन्द्र वर्मा और डॉ. रामकुमार वर्मा का सानिध्य प्राप्त हुआ। कथाकार कमलेश्वर और मार्कण्डेय तथा कविमित्रों धर्मवीर भारती, विजय देव नारायण साही आदि के संपर्क से साहित्यिक अभिरुचि को नया आयाम मिला।

मुरादाबाद से बी.एड. करने के बाद 1958 में आकाशवाणी दिल्ली में आए। मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग के अंतर्गत भाषा विभाग में रहे। आपातकाल के समय उनका कविमन क्षुब्ध और आक्रोशित हो उठा जिसकी अभिव्यक्ति कुछ कालजयी ग़ज़लों के रूप में हुई, जो उनके गजल संग्रह 'साये में धूप' का हिस्सा बनी। सरकारी सेवा में रहते हुए सरकार विरोधी काव्य रचना के कारण उन्हें सरकार का कोपभाजन भी बनना पड़ा। 30 दिसंबर, 1975 की रात्रि में हृदयाघात से 44 वर्ष की अल्पायु में उनकी मृत्यु हो गई।

एक स्थान पर उन्होंने कहा है, "गजल मुझ पर नाज़िल नहीं हुई है"। मैं पच्चीस वर्षों से इसे सुनता और पसंद करता आया हूं ... लेकिन गज़ल लिखने या कहने के पीछे एक जिज्ञासा अकसर मुझे तंग करती है और वह है भारतीय कवियों में सबसे प्रखर अनुभूति के कवि मिर्जा गालिब ने अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए गजल का माध्यम ही चुना? अगर गजल के माध्यम से मिर्जा गालिब अपनी तकलीफ को इतना सार्वजनिक बना सकते हैं, तो मेरी दुहरी तकलीफ (जो व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी) इस माध्यम के सहारे एक अपेक्षाकृत व्यापक पाठक वर्ग तक क्यों नहीं पहुंच सकती ? वे सृजनात्मक कौशल और पौरुष में विश्वास रखते थे। उन्होंने लिखा है:–

कैसे आकाश में सुराख हो नहीं सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

दुष्यंत के बारे में निदा फाजली ने लिखा है, दुष्यंत की नजर उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराजगी से सजी–बनी है। यह गुस्सा और नाराजगी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मों के खिलाफ नए तेवरों की आवाज थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमाइंदगी करती है।

उनकी रचनाएं हैं:–

एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक), मसीहा मर गया (नाटक), सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का बसंत, छोटे–छोटे सवाल, आंगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी, लघु कथाएं (उपन्यास), मन के कोण (लघुकथाएं), साये में धूप (गजल)।

हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील

हिंदी दिवस के सुअवसर पर निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए उसके राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न और संविधान का जो महत्व होता है, वही महत्व उसकी राजभाषा का होता है। भारत एक बहुभाषी देश है और देश की अनेकों भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य हिंदी करती है। हिंदी असंख्य व्यक्तियों के हृदय के भावों एवं उद्गारों की भाषा है। इसकी इसी विशेषता के दृष्टिगत संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को ''राजभाषा'' का दर्जा प्रदान किया। इस स्मृति को ताजा रखने के लिए प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को ''हिंदी दिवस'' के तौर पर मनाया जाता है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर आधारित है जिसका अनुसरण करते हुए हमें हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का ठोस कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी करते हुए हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि निगम के सभी यूनिट/कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, परन्तु अभी इस दिशा में निरंतर क्रियाशील रहने की आवश्यकता है, जिससे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, निगम में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के अपने लक्ष्य के साथ–साथ पिछले कई वर्षों से हरिद्वार एवं टिहरी क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के संचालन के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन भी कर रही है जिससे निगम के प्रत्येक कर्मचारी का राजभाषा हिंदी के प्रति दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। हमें अपने संस्थान में सरकारी कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। इस दिशा में टीएचडीसी हिंदी प्रकोष्ठ के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रयास सराहनीय हैं।

मेरा निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों के प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध है कि यथासंभव स्वयं भी हिंदी में कार्य करें एवं अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें तथा निगम में राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साहजनक वातावरण सृजित करने में योगदान दें।

इसके साथ ही एक बार पुनः आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

जय हिंद!

दिनांकः 14 सितंबर, 2021

(राजीव विश्नोई)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

ज्ञान में निवेश सर्वोत्तम ब्याज का भुगतान करता है – **बेंजामिन फ्रैंकलिन**

निदेशक (वित्त) का संदेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। जब इस पत्रिका का यह अंक प्रकाशित होकर आएगा, तब तक नए वर्ष का आगाज हो चुका होगा। सर्वप्रथम मैं सभी पाठकगणों को नववर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और ईश्वर से कामना करता हूं कि यह वर्ष सबके लिए हर्षोल्लास से भरा हो।

मुझे हाल ही में कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की अध्यक्षता करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस पत्रिका के माध्यम से इन समितियों के सभी सदस्यों से मैं अनुरोध करता हूं कि अपने विभागों/अनुभागों में सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें। मेरा मानना है कि यदि कोई व्यक्ति एक से अधिक भाषाएं सीखता है तो इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं है परन्तु एक राष्ट्र–एक भाषा के संकल्प के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति और विकास के शिखर तक नहीं पहुंच सकता। संविधान निर्माताओं ने इस संकल्प को गंभीरता से लिया और सबसे अधिक लोगों के द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी को राजभाषा का सर्वोच्च आसन प्रदान किया।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपनी व्यावसायिक गतिविधियों में उत्कृष्टता लाने के साथ–साथ, प्रत्येक क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने के प्रयास निरंतर कर रहा है। निगम में राजभाषा कार्यान्वयन पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है तथा हिंदी में लेखन के प्रति कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के मद्देनजर वर्ष 2011 से टीएचडीसी ''पहल'' पत्रिका का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस पत्रिका का प्रत्येक अंक नए कलेवर के साथ प्रकाशित हो रहा है तथा अधिकारी एवं कर्मचारी अपने लेखों एवं रचनाओं के माध्यम से इसके प्रकाशन में पूरा योगदान दे रहे हैं। यह निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति का द्योतक ही है।

मैं इस पत्रिका के निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि इस पत्रिका में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा। मैं पुनः सबको नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं!

धन्यवाद!

जे. बेहेरा

(जे. बेहेरा)

संपादकीय

राजभाषा गतिविधियों के साथ–साथ नवीन लेखों, विचारों, भावों, रचनाओं एवं ज्ञानवर्धक सामग्री से युक्त हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' का दिसंबर अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह अंक राजभाषा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें निगम के कारपोरेट कार्यालय के साथ सभी यूनिट/कार्यालयों में सितंबर माह में आयोजित किए गए हिंदी दिवस समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा की झलकियों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो कि निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को निश्चित ही परिलक्षित करता है।

कारपोरेट कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अन्य पुरस्कारों के साथ–साथ इस पत्रिका के 2020–21 में प्रकाशित अंकों में अपने उत्कृष्ट लेखों के माध्यम से योगदान देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया है। इस कड़ी में डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक एवं श्री गौरव कुमार, प्रबंधक (केंद्रीय संचार), ऋषिकेश को उनके लेख ''सोशल मीडिया–सोशल डिस्टेंसिंग के दौर में संवाद का विशिष्ट माध्यम'', श्रीमती विशालाक्षी मालान, उप प्रबंधक (एनसीआर–व्यवसाय विकास) को ''सेफगार्ड ड्यूटी एवं डोमेस्टिक कंटेंट रिक्वायरमेंट–सोलर उद्योग पर इसका प्रभाव व वर्तमान स्थिति'', श्री भुवनेश सिंह, उप प्रबंधक (परिकल्प–थर्मल), एनसीआर को ''उदय योजना–विद्युत क्षेत्र के सुधार में एक बड़ा कदम'', श्री आल्हा सिंह, अपर महाप्रबंधक (अमेलिया कोल माइन, सिंगरौली) को ''पृथ्वी में अधिकतम कितना गहरा गड्ढा खोदा जा सकता है'' एवं श्री नीलेन्द्र बहुगुणा, कनि. कार्यपालक (मा.सं.–प्रशासन), औषधालय, टिहरी को उनके लेख ''मानवता'' के लिए पुरस्कृत किया गया है। मैं सभी पुरस्कृत लेखकों को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि निगम के अधिक से अधिक अधिकारी एवं कर्मचारी अपने लेखों एवं रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय महत्व के राजभाषा के इस अभियान से जुड़ेंगे।

इस पत्रिका के संरक्षक एवं कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पूर्व अध्यक्ष निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल 31 अक्टूबर, 2021 को सेवानिवृत्त हो गए हैं जिनका इस पत्रिका के प्रकाशन के साथ–साथ निगम में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन की इस गति को बल देने और संवैधानिक दायित्वों के साथ–साथ भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा समय–समय पर जारी किए जाने वाले दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराने के दृष्टिगत श्री जे. बेहेरा, निदेशक (वित्त) कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष मनोनीत किए गए हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि निदेशक (वित्त) महोदय के कुशल नेतृत्व में निगम में राजभाषा हिंदी को नए आयाम प्राप्त होंगे।

(पंकज कुमार शर्मा)
वरि. हिंदी अधिकारी

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–29)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री जे. बेहेरा
निदेशक (वित्त)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
श्री ईश्वर दत्त तिग्गा
उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना/हिंदी)

संपादक
पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग
नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)
मंजु तिवारी
उप अधिकारी

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

लेख/प्रेरक प्रसंग/लघुकथा — **पृष्ठ सं.**

1	विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन भाग : 2	5
2	बड़ा आदमी	9
3	सिंगरौली–ऊर्जाधानी	10
4	मोबाइल एवं इंटरनेट का सही उपयोग आवश्यक	12
5	उत्तराखंड और यहां की इंद्रधनुषीय संस्कृति	13
6	देवतुल्य वृक्ष–पीपल	15
7	योगश्च चित्त–वृत्ति निरोधः भाग : 3	16
8	हिंदी अनुभाग की ओर से	18
9	राजभाषा प्रतिज्ञा	19

कविताएं/विचार

10.	हमको बिहारी आ गई	20
11	मेरी खुशियां–मेरे सपने	20
12	हम सुधरे तो जग सुधरेगा	20
13	बेटी पढ़ाओ–बेटी बचाओ	21
14	कोरोना की आपबीती	22
15	मायूस जिंदगी	23
16	जीवन की डगर	23
17	नए जमाने आएंगे	23
18	फूल पलाश का	23
19	डरी–डरी सी क्यों है मुनिया	24
20	प्रणाम है	24

राजभाषा गतिविधियां/अन्य

21	हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा का आयोजन	25
22	संपादक के नाम पाती	35
23	हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	36
24	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	39
25	एनसीआर कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण	40
26	लेडीज वेलफेयर एसोसिएशन ने मनाया हिंदी दिवस	40
27	हास–परिहास	

लेख

विद्युत वाहन - भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन भाग :2

शिवराज चौहान
उप महाप्रबंधक (अ.एवं प्र. निदे. सचिवालय), ऋषिकेश

पिछले अंक में आपने विद्युत वाहनों के इतिहास, परीक्षण काल, इनके मुख्य घटक, रिड्यूसर एवं बैटरी के बारे में पढ़ा। आइए! इस अंक में इससे संबंधित और जानकारी प्राप्त करते हैं।

बैटरी प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस) : बैटरी प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस) बैटरी में मौजूद कई बैटरी कोशिकाओं का प्रबंधन करती है, जिससे वे एक इकाई की तरह काम कर सकें। ईवी की बैटरी में दसियों से लेकर हजारों मिनी–सेल होते हैं और बैटरी के स्थायित्व और प्रदर्शन को अनुकूलित करने के लिए प्रत्येक सेल का अन्य सेल के समान स्थिति में होना आवश्यक है। सामान्यतः बीएमएस को बैटरी के साथ ही बनाया जाता है, किन्तु कभी–कभी इसे इलेक्ट्रिक पावर कंट्रोल यूनिट (ईपीसीयू) में भी शामिल कर लिया जाता है। बीएमएस मुख्य रूप से सेल के चार्ज/डिस्चार्ज की स्थिति की देखरेख करता है। लेकिन जब यह एक खराब सेल को नोटिस करता है, तो यह रिले मैकेनिज्म (अन्य सर्किट को खोलने/बंद करने का तंत्र) के माध्यम से सेल की पावर स्थिति (चालू/बंद) को स्वचालित रूप से समायोजित करता है।

बैटरी ताप प्रणाली (बीएचएस): कम तापमान में बैटरी चार्जिंग क्षमता और गति दोनों में कमी महसूस की जाती है। बैटरी ताप प्रणाली बैटरी को आदर्श तापमान सीमा के भीतर रखने, मौसमी प्रभाव को कम करने और अधिकतम ड्राइविंग दूरी को बनाए रखने के लिए उपयोगी होती है। यह प्रणाली सिस्टम चार्ज करते समय भी काम करती है और चार्ज की दक्षता सुनिश्चित करती है।

ऑन–बोर्ड चार्जर (ओबीसी): ऑन–बोर्ड चार्जर (OBC) का उपयोग स्लो चार्जर्स या घरेलू आउटलेट्स पर इस्तेमाल होने वाले पोर्टेबल चार्जर्स से अल्टरनेटिंग करंट (AC) को डायरेक्ट करंट (DC) में बदलने के लिए किया जाता है। इससे ओबीसी एक पारंपरिक इन्वर्टर के समान प्रतीत होता है लेकिन वे उपयोगिता में काफी भिन्न होते हैं। जहां ओबीसी चार्जिंग के लिए उपयोगी है वहीं इन्वर्टर का उपयोग त्वरण/मंदन के लिए होता है। फास्ट–चार्जिंग में ओबीसी की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि फास्ट चार्जर्स पहले से ही डायरेक्ट करंट (DC) में विद्युत आपूर्ति करते हैं।

इलेक्ट्रिक पावर कंट्रोल यूनिट (ईपीसीयू): इलेक्ट्रिक पावर कंट्रोल यूनिट (ईपीसीयू) वाहन में विद्युत शक्ति के प्रवाह को नियंत्रित करने वाले लगभग सभी उपकरणों का एक कुशल समूह है। इसमें इन्वर्टर, निम्न वोल्टेज डीसी कन्वर्टर (एलडीसी) और वाहन नियंत्रण इकाई (वीसीयू) सम्मिलित हैं।

1. **इन्वर्टर:** इन्वर्टर मोटर की गति को नियंत्रित करने के लिए बैटरी की डीसी को एसी में बदलता है। यह उपकरण वाहन के त्वरण और मंदन को क्रियान्वित करने के लिए उपयोगी है, इसलिए यह (EV) के परिचालन को सुगमता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
2. **निम्न वोल्टेज डीसी–डीसी कन्वर्टर (LDC):** EV में सभी इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियां कम वोल्टेज की विद्युत का उपयोग करती हैं, इसलिए इन प्रणालियों के उपयोग के लिए बैटरी की उच्च वोल्टेज को पहले लो–वोल्टेज में परिवर्तित किया जाना आवश्यक है। EV की हाई–वोल्टेज बैटरी की हाई वोल्टेज विद्युत को एलडीसी के उपयोग से ही लो–वोल्टेज (12 वोल्ट) में परिवर्तित किया जाता है और तत्पश्चात इसकी आपूर्ति वाहन की विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों को की जाती है।
3. **वाहन नियंत्रण इकाई (VCU):** वीसीयू वाहन में सभी विद्युत शक्ति नियंत्रण प्रणालियों के नियंत्रण टावर के रूप में ईपीसीयू का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह वाहन के लगभग सभी बिजली नियंत्रण तंत्र यथा–मोटर नियंत्रण, पुनर्योजी ब्रेकिंग नियंत्रण, एसी

लोड प्रबन्धन और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के लिए विद्युत आपूर्ति आदि की देखरेख करता है।

ऊर्जा स्रोत–लीथियम आयन बैटरीः–

उच्च ऊर्जा घनत्व, लम्बी आयु व उच्च शक्ति घनत्व के कारण अधिकांश आधुनिक बैटरी चालित इलेक्ट्रिक वाहनों में लीथियम–आयन बैटरी का उपयोग किया जाता है। इन वाहनों में विशेषतः डिजाइन की गई उच्च ऐम्पियर–घंटे (AmpH) क्षमता की बैटरियों का उपयोग होता है। सुरक्षित व कुशल संचालन के लिए लीथियम–आयन बैटरी का उपयोग सुरक्षित तापमान और वोल्टेज रेंज के भीतर ही किया जाना चाहिए। लीथियम–आयन बैटरी की घटती कीमतों से इलेक्ट्रिक वाहनों की कीमतों में कुछ कमी आई है। इलेक्ट्रिक वाहन, ग्रिड ऊर्जा का 59 प्रतिशत से 62 प्रतिशत भाग पहियों को प्रदान करती है, जबकि परम्परागत जीवाश्म आधारित वाहनों में मात्र 17 प्रतिशत से 21 प्रतिशत ऊर्जा ही पहियों को प्रदान की जाती है। जिससे पता चलता है कि गैसोलीन आधारित इंजन में ऊर्जा का अधिकांश भाग घर्षण, ध्वनि, ताप ऊर्जा इत्यादि में व्यर्थ चली जाती है।

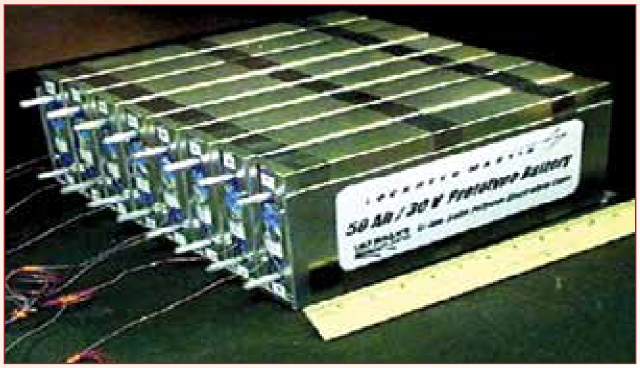

लीथियम आयन पालीमर बैटरी प्रोटोटाइप

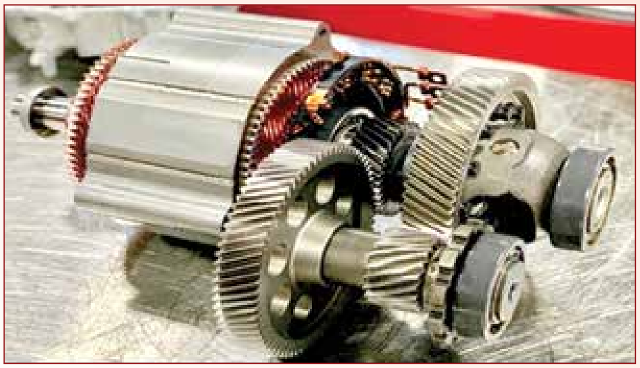

इलेक्ट्रिक वाहनों की कर्षण मोटर

बेहतर बैटरी व बैटरी प्रबंधन :–

लीथियम–आयन बैटरी में नई खोजों के पश्चात पूर्ण आकार के, राजमार्गो पर दौड़ने वाले इलेक्ट्रिक वाहनों की एक टैंक क्षमता के ईंधन द्वारा तय की जाने वाली दूरी को एक चार्ज में तय करना संभव हो पाया है। लीथियम–आयन बैटरी को तुलनात्मक रूप से सुरक्षित तौर पर व घंटों की बजाय मिनटों में रिचार्ज किया जा सकता है और अब एक चार्ज में अधिक दूरी तय की जा रही है। जैसे–जैसे तकनीक में परिपक्वता आयेगी और उत्पादन मात्रा में वृद्धि होगी, तो परिणामस्वरूप इन हल्की और उच्च क्षमता वाली लीथियम–आयन बैटरी की उत्पादन लागत में कमी आयेगी, जिससे वाहन की लागत में कमी अवश्यम्भावी है। अनेकों कम्पनियां व शोधकर्ता नई बैटरी टेक्नालाजी, सालिड स्टेट बैटरी तथा वैकल्पिक प्रौद्योगिकी पर काम कर रही हैं, जिनके आशानुकूल परिणाम अवश्य ही प्राप्त होंगे। सुपरकैपिसियेटर के उपयोग द्वारा बैटरी इलेक्ट्रॉनिक नियन्त्रण से बैटरी को इलेक्ट्रिक मोटर से अलग कर ऊर्जा की अधिक व कम अवधि की मांग और रिजेनेरेटिव ब्रेकिंग इनर्जी इत्यादि सिद्धान्तों से बैटरी को लम्बे समय तक चलाया जा सकेगा।

इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रकारः– ऊर्जा स्रोत के आधार पर इलेक्ट्रिक वाहनों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैः–

1. **शुद्ध इलेक्ट्रिक वाहनः–** शुद्ध इलेक्ट्रिक वाहन विशेषतया इलेक्ट्रिक मोटर्स के माध्यम से चालित होती हैं। इनमें विद्युत की आपूर्ति बैटरी, सोलर पैनल या फ्यूल सेल से की जा सकती है।

2. **हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहनः–** इन वाहनों में एक परम्परागत I.C.Engine और इलेक्ट्रिक मोटर का एक साथ प्रयोग होता है।

3. **प्लगइन इलेक्ट्रिक वाहन (PEV):–** कोई भी वाहन जिसे वाह्य विद्युत स्रोत जैसे–वाल साकेट से रिचार्ज किया जा सकता है और रिचार्जेबल बैटरी पैक में संग्रहीत ऊर्जा पहियों को चलाती है अथवा चलाने

में योगदान देती है, प्लग इन इलेक्ट्रिक वाहन PEV कहलाता है।

4. **रेंज ऐक्टेन्डेड इलेक्ट्रिक वाहन (REEV)**:– ये वाहन एक विद्युत मोटर और प्लगइन बैटरी द्वारा चालित होते हैं। इनमें ऊर्जा के प्राथमिक स्रोत के रूप में बैटरी का ही उपयोग होता है जबकि वाह्य आई. सी. इंजन मात्र बैटरी चार्जिंग के लिए उपयोग किया जाता है।

बैटरी की चार्जिंग :–

EVs आम तौर पर पारम्परिक विद्युत आउटलेट या समर्पित चार्जिंग स्टेशनों से चार्ज होती हैं। जिस प्रक्रिया में सामान्यतया कई घंटे लगते हैं अथवा रातभर की चार्जिंग से दिनभर के सामान्य उपयोग हेतु वाहन की बैटरी चार्ज की जाती है। विभिन्न प्रकार की बैटरी चार्जिंग प्रक्रिया, जो अभी उपयोग में हैं वे हैं– कर्ब कनेक्ट, इन्डक्टिव चार्जिंग इत्यादि। इन चार्जिंग में लिया जाने वाला लम्बा समय ही इनका मुख्य दोष है।

टेसला माडल S चेसिस ड्राइव मोटर के साथ

जिसका हल Rapid Charging जैसे– Aerovirorment Posicharge, Norvik Minit Charge। A Rapid Charging के अलावा बैटरी Swapping भी एक विकल्प प्रतीत होता है, जिसके लिए विभिन्न प्लेटफार्म, माडल व निर्माताओं में मानकीकरण की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में वाहनों को रिचार्ज करने के बजाय वाहनों की बैटरियों को विशेष स्टेशनों पर बदला जा सकेगा। सामान्य बैटरी को तो इलेक्ट्रिक साकेट से जोड़कर चार्ज किया जा सकता है किन्तु अत्यधिक ऊर्जा घनत्व वाली बैटरी यथा–Metal-Airfuel Cells, Silicon-Air, Aluminium-Air को चार्ज करने के लिए घातुकर्म प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। जैसे–Aluminium Smelting।

चेसिस स्वैपिंग:– बैटरी चार्जिंग और बैटरी स्वैपिंग का एक विकल्प चैसिस स्वैपिंग भी है। जिसके तहत वाहन स्वामी मात्र कार की बॉडी ही क्रय करेगा और एक चेसिस जिस पर बैटरी, इलेक्ट्रिक मोटर व पहिये लगे होंगे, को लीज पर लिया जा सकेगा, जिससे वाहन स्वामी को कैपिटल मूल्य का ह्रास न्यूनतम होगा।

डाइनामिक चार्जिंग:– इस प्रक्रिया में वाहन की बैटरी की चार्जिंग उसके सड़क/राजमार्ग पर गतिमान बने रहने के दौरान हो सकेगी। इस प्रक्रिया द्वारा चार्जिंग प्रणालियों पर अनुसंधान कार्य जारी हैं। इसके तहत तीन प्रकार से चार्जिंग हो सकेगी जैसे– Overhead Power Line, Ground Level Power Supply through in road rail, Ground Level Power Supply through on road rail, Ground Level Power Supply through inducetive coils.

इलेक्ट्रिक वाहन के लाभ और हानियां :

(1) **पर्यावरणीय**– यद्यपि इलैक्ट्रिक वाहन से कोई उत्सर्जन नहीं होता है तथापि बैटरी चार्जिंग में प्रयुक्त ऊर्जा उत्पादन और वाहन निर्माण से जुड़े वायु उत्सर्जन इत्यादि प्रदूषण के कारण हो सकते हैं। बैटरी उत्पादन हेतु अयस्क खनन और आयुसीमा पूर्ण कर लेने के पश्चात अक्षरणीय कूड़े के भंडारण व निस्तारण की समस्या तथा इन प्रक्रियाओं में उत्सर्जित कार्बन की गणना के बावजूद एवं अन्य परिस्थितियों की समानता पर इलेक्ट्रिक वाहन परम्परागत ईंधन पर चलने वाले वाहनों की तुलना में कम प्रदूषण करते हैं। अतः निर्माण प्रक्रिया और बैटरी चार्जिंग की प्रक्रिया में उत्सर्जित गैसों व कार्बन की गणना करने पर भी इलेक्ट्रिक वाहन अपेक्षाकृत Environment friendly हैं।

(2) **सामाजिक एवं आर्थिकः**– वर्ष 1991 के पश्चात लीथियम–आयन बैटरी अल्प कार्बन उत्सर्जन परिवहन प्रणाली हेतु एक महत्वपूर्ण तकनीक बन गई। कम कलपुर्जों के उपयोग के कारण इलेक्ट्रिक वाहन अधिक टिकाऊ व किफायती होते हैं और उन्हें अपेक्षाकृत कम मरम्मत की आवश्यकता होती है। लीथियम टेक्नालाजी की जटिल आपूर्ति श्रृंखला में, कारपोरेट हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न हितधारक, जनहित समूह और राजनीतिक नीति निर्धारक समूह सम्मिलित होते हैं। अतः कहा

जा सकता है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के तकनीकी उत्पादन व उपयोग के परिणामों से सम्बन्धित काफी बड़ा वर्ग सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर लाभान्वित होगा।

(3) **यांत्रिकः–** इलेक्ट्रिक मोटर यंत्रवत I.C. Engine की तुलना में बहुत ही सरल होती है। जिसमें ऊर्जा दक्षता 90 प्रतिशत तक प्राप्त की जा सकती है और साथ ही गति और शक्ति को सूक्ष्मता से नियन्त्रित करने की क्षमता होती है। इनमें पुनर्योजी ब्रेकिंग सिस्टम (Regenerative Braking System) के उपयोग द्वारा संवेगात्मक ऊर्जा को पुनः संचयी विद्युत ऊर्जा में बदला जा सकता है। जिसके परिणामस्वरूप ब्रेकिंग सिस्टम की टूटफूट/घिसावट में कमी और किसी यात्रा की कुल ऊर्जा आवश्यकता को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इलेक्ट्रिक मोटर को सामान्य इंजन की तुलना में सूक्ष्मता से नियन्त्रित किया जा सकता है और साथ ही ये जड़त्व से वेग प्राप्त करने की स्थिति में अधिक टॉर्क उत्पन्न करती है। इनमें ऊर्जा कर्व (Curve) से मेल करने के लिए एक से अधिक गीयर की आवश्यकता भी नहीं होती है, जिससे विद्युत वाहनों में गीयर बाक्स व टार्क कन्वर्टर्स की आवश्यकता नहीं होती। इंजन की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहन कम शोर तथा कम्पन करते हैं, जिससे ध्वनि प्रदूषण में कमी होती है, यद्यपि कुछ ध्वनि सुरक्षा की दृष्टि से वांछनीय है किन्तु इन वाहनों के बढ़ते प्रयोग से इनका आवाज न करना अन्धे, बुजुर्ग व छोटे बच्चों की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकता है। इस समस्या के निदान के लिए वाहन निर्माता कम्पनियां ऐसी प्रणालियां विकसित कर रही है जिनमें धीमी गति से वाहन के चलने की स्थिति में चेतावनी ध्वनि से आस–पास स्थित व्यक्ति/प्राणी सतर्क हो सकें।

(4) **ऊर्जा निर्भरताः–** इंजन जहां पेट्रोलियम पदार्थों से ही चालित होते हैं वहीं इलेक्ट्रिक वाहनों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विद्युत से चार्ज किया जा सकता है। इस परिस्थिति में इलेक्ट्रिक वाहन ऊर्जा स्रोतों का लचीलापन प्रदान करते हैं।

(5) **ऊर्जा दक्षताः–** टैंक–टु–व्हील (Tank to wheel) दक्षता में इलेक्ट्रिक वाहन, इंजनों की तुलना में काफी किफायती है। इलेक्ट्रिक वाहन में आइडलिंग के दौरान ऊर्जा की खपत नहीं होती, जबकि इसके विपरीत इंजन में आइडलिंग के दौरान भी ऊर्जा खपत होती है। EV को चलाने में मात्र रू.1.00 से रू.1.25 प्रति किमी. का खर्च आता है, जबकि पेट्रोल/डीजल चालित वाहन में यह लागत रू. 5.00–रू.7.00 आती है। EV फोर–व्हीलर को पूर्ण चार्ज करने में 20 से 30 यूनिट विद्युत खर्च होती है, वहीं टू–व्हीलर को चार्ज करने में 3 यूनिट विद्युत खर्च होती है।

(6) **ग्रिड का स्थायित्व (Stabilization):** इलेक्ट्रिक वाहन चार्जेबल बैटरी से चलते हैं और अधिकांशतः रात्रि में जब ऊर्जा मांग कम होती है, चार्ज किये जाते हैं। ऐसे वाहन जब उपयोग में नहीं होते हैं तो उन्हें उच्च मांग के समय पर विद्युत ग्रिड से जोड़कर अतिरिक्त मांग की पूर्ति की जा सकती है। इसके लिए व्हीकल–टु–ग्रिड (Vehicle-to-Grid) कनेक्शन उपयोग में लाया जाता है, जिससे नये विद्युत गृहों के निर्माण की आवश्यकता को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। ग्रिड स्थायित्व में इस प्रणाली को अपनाकर सामूहिक पार्किंग/चार्जिंग स्टेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

(7) **इलेक्ट्रिक वाहनों की सार्वजनिक परिवहन हेतु उपयोगिताः–** इलेक्ट्रिक वाहनों की प्रति व्यक्ति प्रति किलोवाट दक्षता की बात करें तो व्यक्तिगत के विपरीत सार्वजनिक परिवहन में बड़े लाभ की संभावना है। शोधों से पता चला है कि परिवहन हेतु अपेक्षाकृत शान्त और आरामदायक ट्राम्स के उपयोग से शहरों में जीवाश्म आधारित इंजन चालित वाहनों को कम किया जा सकता है। पहियों पर चलने वाले वाहनों में समान क्षमता की ट्राम्स की तुलना में दो तिहाई अधिक ऊर्जा खपत होती है और साथ ही ये विद्युत ऊर्जा पर चलती हैं, जिससे ये अधिकतम ऊर्जा कुशल सार्वजनिक परिवहन का साधन है। एक ओर जहाँ इंजन आधारित बस का जीवनकाल 15 वर्ष होता है वहीं एक ट्राम 100 वर्ष तक भी काम करती रहती है।

क्रमशः.................... अगले अंक में

बोधकथा

बड़ा आदमी

शीला चौहान
उप अधिकारी (संविदा), ऋषिकेश

अंग्रेजी साहित्य के विश्वविख्यात साहित्यकार एच.जी. वेल्स विज्ञान लेखन के क्षेत्र में अग्रणी माने जाते हैं। वे स्वभाव से अत्यन्त दयालु और शांतिप्रिय व्यक्ति थे। लंदन के एक अभिजात्य क्षेत्र में उन्होंने अपने निवास के लिए एक बहुत बड़ा और भव्य बंगला बनवाया। बंगला बनने के उपरान्त कमरों को अच्छी तरह से सुसज्जित किया गया और फिर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को उसमें रहने के लिए कह दिया गया। कर्मचारियों को भव्य और सुसज्जित कमरे देने के बाद उन्होंने अपने लिए उस मकान की ऊपरी मंजिल पर एक साधारण कक्ष बनवाया जहां वे रात्रि–विश्राम किया करते थे। लोगों को यह सब देखकर आश्चर्य होता था। जब बात ज्यादा बढ़ने लगी और लोगों को पचा पाना कठिन हो गया तो एक दिन उनके किसी मित्र ने उनसे पूछ ही लिया, 'इतना भव्य भवन बनवाने के बाद भी तुमने अपने लिए यह साधारण–सा कक्ष क्यों चुना? जबकि निचली दो मंज़िलों में इतने कमरे बने हुए हैं? वेल्स को ऐसे प्रश्नों की आशंका थी। उन्होंने सरलता के साथ उत्तर दिया, 'उन कमरों में हमारे कर्मचारी निवास करते हैं।' मित्र को सुनकर आश्चर्य हुआ। हंसकर कहने लगे, 'क्या कमाल करते हो, सर्व–सामान्य में यही प्रचलित है कि भव्य भवन में लोग स्वयं रहते हैं और कर्मचारियों के लिए साधारण कमरे होते हैं, ऐसे ही जैसा तुम्हारा यह शयनकक्ष है। यह सुनकर वेल्स कुछ क्षण मौन रहे। कुछ क्षणोपरांत बड़े गंभीर भाव से उन्होंने कहा, 'मैंने अपने कर्मचारियों को भव्य कमरे इसलिए दिए हैं, क्योंकि 'मेरा बाल्यकाल एक सीलन–भरे तंग कमरे में गुज़रा है। मैं जानता हूं कि ऐसे कमरों में रहना कितना कष्टकारक होता है।'

मित्र महोदय उत्तर सुनकर अवाक रह गए। एच.जी. वेल्स ने पुनः व्यथित स्वर में कहा, 'तुमको शायद पता न हो कि मेरी मां किसी समय लंदन के एक संपन्न परिवार में घर के कामकाज करती थीं।' वह व्यक्ति एच.जी. वेल्स को निहारता रहा और फिर बड़े मध्यम स्वर में बोला, 'पहले तो मैं केवल इतना ही जानता था कि तुम बहुत बड़े साहित्यकार हो, किन्तु आज विदित हुआ कि तुम एक बहुत बड़े आदमी भी हो। ऐसे मित्र पर मुझे गर्व है।'

लेख

सिंगरौली-ऊर्जाधानी

आल्हा सिंह
अपर महाप्रबंधक, पवन विद्युत परियोजना, द्वारका

सिंगरौली उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है इसमें उत्तर प्रदेश का सोनभद्र जिला तथा मध्य प्रदेश का सीधी जिला आता है। 24 मई, 2008 को मध्य प्रदेश सरकार ने सीधी जिले से तीन तहसील निकालकर सिंगरौली जिले का निर्माण किया। यह मध्य प्रदेश का 50वां जिला है। इसमें 5 तहसील हैं, देवसर, चितरंगी, सिंगरौली, गाडा व सिराई। इसमें 3 विधानसभा क्षेत्र व सीधी यहां का लोकसभा क्षेत्र है। सिंगरौली क्षेत्र से सोन नदी बहती है तथा यह विंध्य पर्वत श्रृंखला के घने वनों से घिरा हुआ है। यहां की कमीश्नरी रीवा में है।

इस क्षेत्र का पौराणिक नाम श्रृंगावली है जो ऋषि श्रृंग के नाम पर रखा गया है। श्रृंग नाम के दो ऋषि हुए हैं। एक रामायण काल में, जिन्होंने अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के लिए पुत्र कामेष्टि यज्ञ किया था व राम, भरत, लक्ष्मण व शत्रुघ्न का जन्म हुआ। इन्होंने अंग देश के राजा रोमपाद की दत्तक पुत्री शांता जो कि दशरथ व कौशल्या की पुत्री थी, से विवाह किया था। दूसरे श्रृंग ऋषि महाभारतकालीन थे जिनके श्राप से हस्तिनापुर के धर्मज्ञ महाराजा परीक्षित को सर्प तक्षक ने डसा था और उनकी मृत्यु हो गई थी। सिंगरौली अब रीवा बघेलखंड का हिस्सा है। आजादी से पहले रीवा की रियासत के राजा इस सघन वन क्षेत्र को अपराधियों के लिए खुली जेल की तरह उपयोग करते थे तथा उन्हें इन सघन वनों में छोड़ देते थे। एकाकीपन तथा जंगली जानवरों के खतरे की सजा भयानक थी।

वर्तमान में यह क्षेत्र प्राकृतिक और खनिज संसाधनों से सम्पन्न है। इसमें कोयला बहुतायत से पाया जाता है। रिहन्द नदी पर बांध बनाने के कारण जल उपलब्धता से इस क्षेत्र में कोयले को ईधन की तरह प्रयोग करने वाली ताप विद्युत परियोजना लगाई गई है। अत्यधिक विद्युत ऊर्जा उत्पादन के कारण यह क्षेत्र मध्य प्रदेश की ऊर्जा राजधानी के नाम से विख्यात है। इसे ऊर्जांचल या ऊर्जाधानी भी कहा जाता है। यहां पर कोयले के हजारों टन के भंडार हैं। यहां पर जो विद्युत संयंत्र लगे हैं उन्हें पिट हैड संयंत्र कहा जाता है क्योंकि आवश्यक प्राकृतिक संसाधन यही उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार व मध्य प्रदेश सरकार की सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां कार्य कर रही हैं साथ ही प्राइवेट सैक्टर की बड़ी कंपनियों ने भी अपने ऊर्जा संयत्र लगाए हैं। इन ताप विद्युत संयंत्रों को कोयला इसी क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न खदानों से मिल जाता है। पानी की आपूर्ति रिहन्द बांध के पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जलाशय से की जाती है।

सिंगरौली में सोने की खदान मिलने की भी सूचना अखबारों में पिछले दिनों हुई थी। सोने की खदान हेतु सर्वेक्षण एव अन्वेषण कार्य प्रगति पर हैं। यह हिस्सा मध्य प्रदेश में है।

इस क्षेत्र में निम्न मुख्य सार्वजनिक क्षेत्र तथा प्राइवेट क्षेत्र की कम्पनियां कार्य कर रही हैं:–

1. नार्दन कोल फील्ड लिमिटेड, कोल इण्डिया की इकाई कोयले के उत्पादन में अग्रणी है। सीएमपीडीआईएल भी इसकी ही सहायक कम्पनी है जो कोयले की भूमि में उपलब्धता व उसकी गुणवत्ता का पता लगाती है। इस क्षेत्र में कोयले की निम्न खदानें चल रही है जिनसे कोयला उत्पादन हो रहा है। जयंत, ककरी, वीना, खडिया, दुदधीचुआ, निगाही अमलेरी, कृपणशिका, झिंगुखा, गोखी महान, अमीलिया नोर्थ आदि। कुछ कोल ब्लाक का आबंटन भी विभिन्न कम्पनियों को किया गया है जिनमें बंधा ब्लाक आदित्य बिरला को तथा अमीलिया ब्लाक टीएचडीसीआईएल को किया जाना प्रमुख है।
2. एनटीपीसी लिमिटेड – एनटीपीसी इस क्षेत्र में 1977 से जमी है। इसने इस क्षेत्र में पहला ताप विद्युत संयंत्र शक्तिनगर उत्तर प्रदेश में सिंगरौली सुपर थर्मल पावर प्लांट नाम से बनाया। इसकी वर्तमान क्षमता 2000 मेगावाट ताप विद्युत से, 08 मेगावाट जल विद्युत से तथा 5 मेगावाट सोलर से दोहन

की जा रही है। कुल क्षमता 2013 मेगावाट है। एनटीपीसी का दूसरा संयंत्र विंध्यनगर ताप विद्युत परियोजना समस्त भारत में सबसे बड़ा ताप विद्युत उत्पादन संयंत्र है। यह वैधन जिला मुख्यालय सिंगरौली में स्थापित है इसकी क्षमता 4060 मेगावाट है। एनटीपीसी की तीसरी परियोजना रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लान्ट 3000 मेगावाट क्षमता का उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में बीजपुर में स्थापित है।

3. रिलाइंस पावर की सासन ताप विद्युत परियोजना की संस्थापित क्षमता 3960 मेगावाट जिसमें 6x660 मेगावाट की उच्च ताप इकाईयां हैं। यह सासन गांव में सिंगरौली जिले में रिहन्द बांध के जलाशय के किनारे पर स्थापित है। इस परियोजना के साथ कोयला खदान भी रिलाइंस को मिली हैं।

4. जय प्रकाश एसोसिएट की नीगरी परियोजना 2x660 मेगावाट अर्थात कुल 1320 मेगावाट क्षमता की स्थापित है। इसके लिए कोयला अमीलिया नोर्थ ब्लाक से उपलब्ध होता है।

5. Essar की 600 मेगावाट की 2 इकाई कुल क्षमता 1200 मेगावाट कैप्टिव कोट फायर्ड पिटहैड पावर प्लांट है।

6. यूपीपीवीएनएल की अनपारा में 2630 मेगावाट क्षमता का उच्च ताप विद्युत संयंत्र स्थापित है जिनसे उत्पादन हो रहा है। ओवरा में भी 1000 मेगावाट का उच्च ताप संयंत्र स्थापित है। यहां पर एक 3x33 मेगावाट का जल विद्युत संयंत्र भी स्थापित है। यह रिहंद/रेनुका नदी पर है।

7. रेनुकूट में हिण्डालको कंपनी का एल्यूमीनियम कारखाने को विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ति हेतु कैप्टिव पावर प्लांट लगा है जिसकी स्थापित क्षमता 888 मेगावाट है। कनौरिया कैमीकल ने भी अपनी कंपनी की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 50 मेगावाट का ताप विद्युत संयंत्र स्थापित किया है।

8. यहां पर टीएचडीसी इंडिया लि. को खुर्जा परियोजना क्षमता 2x660 मेगावाट हेतु कोयले की आपूर्ति के लिए अमीलिया कोल ब्लाक का आबंटन किया गया है। अमीलिया कोल ब्लाक हेतु आवश्यक भूमि का अधिग्रहण कर लिया गया है। कोल कारीडोर विस्थापितों की कालोनी हेतु भूमि अधिग्रहण पूरा कर कार्य चालू कर दिया गया है। इस खदान की क्षमता वर्तमान में 5.6 एमटीपीए है और इसका क्षेत्रफल 1175 हैक्टेयर है। कुछ भूमि जिसमें सघन वन क्षेत्र होने के कारण पर्यावरण स्वीकृति न मिलने से खदान की क्षमता 8.4 एमटीपीए से घटकर 5.6 एमटीपीए ही रह गई है। इस भूमि का क्षेत्रफल 411 हैक्टेयर है जिसे पर्यावरण स्वीकृति नहीं मिली।

सिंगरौली क्षेत्र में माडा तहसील में पुरातात्विक महत्व की गुफायें भी स्थित है। इनमें विवाह माडा, गणेश माडा, शंकर माडा, जलजलिया व रावणमाडा है। अमीलिया कोल ब्लाक परियोजना सिंगरौली टीएचडीसी में सलाहकार के पद पर कार्यरत श्री आर.पी. त्रिपाठी ने इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश सरकार में सेवारत रहते हुए इन गुफाओं के पुरातात्विक महत्व को पहचान कर शासन के साथ पत्राचार कर इन्हें विशेष पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके साथ विचार विमर्श से सिंगरौली क्षेत्र का महत्व भी पता चला। अतः सिंगरौली क्षेत्र में भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की तथा प्राइवेट क्षेत्र की ऊर्जा उत्पादक कंपनियों की उपस्थिति के कारण तथा इसमें विद्युत उत्पादन हेतु प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता में होने से यहां पर लगभग 20000 मेगावाट से अधिक के विद्युत संयंत्र स्थापित हैं, जो कि समस्त भारत के किसी भी अन्य क्षेत्र में स्थित संयंत्रों की क्षमता से अधिक हैं। अतः सिंगरौली वास्तव में ही ऊर्जा की राजधानी है और इसे ऊर्जांचल कहना उचित ही है।

लेख

मोबाइल एवं इंटरनेट का सही उपयोग आवश्यक

पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी, ऋषिकेश

मोबाइल एवं इंटरनेट आज समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता बन गए हैं। कोरोनाकाल में आपस में संपर्क करने के यही ऐसे माध्यम थे जिन्होंने इस विपत्ति के समय में एक दूसरे को जोड़कर रखा और लोगों को अवसाद ग्रस्त होने की स्थिति से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मरीजों के इलाज में भी मोबाइल एवं इंटरनेट का बहुत सदुपयोग हुआ। विभिन्न ऐसे एप विकसित हो गए हैं जिनके माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। आज वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से एक ही चिकित्सक मीलों दूर बैठकर मरीजों का इलाज कर रहा है।

उनकी दवाई व्हाट्सएप पर लिखकर भेज रहा है। अनेक कंसलटेंसी सर्विसेज इनका उपयोग कर रहे हैं तथा मिनटों में समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं एवं इनके माध्यम से अपनी पढ़ाई से संबंधित समस्याओं का समाधान तुरंत प्राप्त कर रहे हैं। कार्यालयों में भी वर्क फ्राम होम कल्चर की शुरूआत हुई है। 4जी एवं 5जी से इंटरनेट को गति प्राप्त हुई हैं, इसके साथ ही इंटरनेट सस्ती दर पर उपलब्ध होने से, सोने पर सुहागे का काम किया है।

यदि इनके उपयोग व दुरूपयोग की तुलना की जाए तो इनके दुरूपयोग का प्रतिशत भी कम नहीं है। आप कहीं पर भी हो, जहां देखो सामने से आने वाले 100 में से 95 लोगों की गर्दनें झुकी हुई हैं। एक मिनट के लिए भी वह अपनी गर्दन सीधी नहीं कर रहे हैं। बाजार में मोबाइल फोन की कम कीमत होने के कारण परिवार के प्रत्येक सदस्य के पास मोबाइल होना कोई बड़ी बात नहीं है। घर पर जाओ तो बीवी एक मोबाइल पर गर्दन झुकाए बैठी है। पति ने भी अपना मोबाइल खोलकर उस पर गर्दन झुका दी है। बच्चा सुबह से शाम तक और देर रात तक मोबाइल पर गर्दन झुकाए बैठा है। कोई आपस में बात नहीं कर रहा वे सिर्फ मोबाइल पर ऐसे नजर गड़ाए हुए हैं कि पता नहीं कौन सी सूचना उनसे छूट जाए, यदि ऐसा हुआ तो न जाने कौन सी विपत्ति आ जाएगी। बस, ट्रेन में सफर करते हुए लगातार अनेक यात्री गर्दन झुकाए कुछ ढूंढ़ने की कोशिश करते हमेशा पाए जाते हैं। रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेंड पर भी गाड़ी का इंतजार करते लोग एक दूसरे की तरफ देखते भी नहीं, बस उनकी सारी दुनिया मोबाइल में ही छुपी होती है।

बच्चे के पैदा होने के साथ ही माता–पिता अब उसके लालन–पालन, स्कूल की पढ़ाई, उसके भविष्य की चिंता तो करते ही है, साथ ही यह भी चिंता करते हैं कि इसे कौन सा मोबाइल दिलाया जाना चाहिए। बच्चे को भी जैसे ही होश आता है, वह माता–पिता की मोबाइल पर झुकी हुई गर्दनें देखता है तो वह उस पर झपट्टा मारना शुरू कर देता है। माता–पिता उसकी इस हरकत से आहत होते हैं और शीघ्र ही उसके लिए एक नए मोबाइल का प्रबंध किया जाता है। मोबाइल की रंगीन दुनिया में खोकर वह शीघ्र ही इसका एडिक्ट हो जाता है और दिन–रात अपनी गर्दन झुकाकर वह भी इस अंधी रेस में शामिल हो जाता है। प्रोडक्टिव व गैर प्रोडक्टिव चीजों का उसको अहसास नहीं होता वह सिर्फ यू–टयूब, व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर जैसी दुनिया में खो जाता है। चिंता इस बात की है कि यदि इसी प्रकार लोगों की गर्दनें झुकी रही तो कुछ पीढ़ियों के बाद पैदा होने वाले बच्चों की गर्दनें पहले से ही झुकी होंगी और नजर कमजोर होगी। यह वैज्ञानिक सत्य है कि जिस अंग का प्रयोग हम जिस प्रकार करते हैं, हमारी आने वाली नस्लों पर उसका प्रभाव उसी रूप में पड़ता है। अतः प्रत्येक चीज का सही इस्तेमाल करने की आवश्यकता है।

शिक्षा मौके से प्राप्त नहीं होती है, यह उत्सुकता और परिश्रम के साथ प्राप्त होती है – **अबीगैल एडम्स**

लेख

उत्तराखंड और यहाँ की इंद्रधनुषीय संस्कृति

नीलम चमोली,
शिक्षिका एवं समाज सेविका, पत्नी श्री राजेश चमोली वरि. प्रबंधक, ऋषिकेश

जब भी हम किसी देश या प्रदेश के बारे में सोचते हैं तो सबसे पहले वहां की संस्कृति, वेश–भूषा व खानपान का ख्याल हमारे जहन में आ ही जाता है। क्योंकि किसी भी क्षेत्र की पहचान उसकी वेश–भूषा, रहन–सहन, उसके संस्कारों व उसकी संस्कृति से झलकती है। मैं एक उत्तराखंडी हूँ तो स्वाभाविक है कि मुझे अपने उत्तराखण्ड की हर बात से प्रेम होगा ही तथा मुझे इस बात का गर्व है।

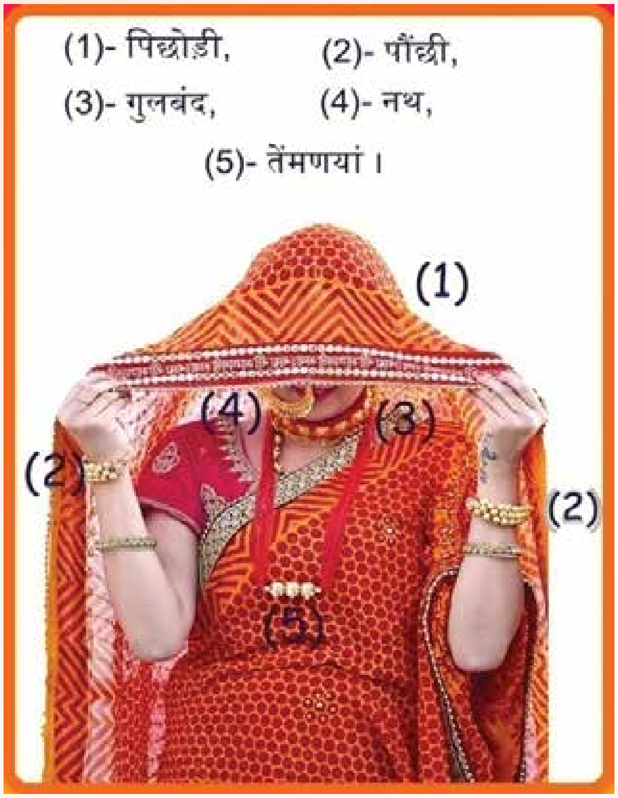

चाहे वो यहां का खुशनुमा मौसम व प्राकृतिक छटा हो या पारंपरिक पहनावे व आभूषण जैसे नथुलि (नथ), हंसुली (गले का हार), धगुली (हाथ में पहने जाने वाला), पौंछी (हाथ में पहने जाने वाला), पिछोड़ि (ओढ़नी) हो या पारंपरिक खानपान जैसे फाणु पालक की काफली, थिचवानी, चेंसा भात, राजमा की दाल, सिडकु, अस्के और कोदे (मंडुआ) की रोटी के साथ भांग और तिल की चटनी हो, तो फिर चाहे कितने ही राजसी पकवान परोस दिए जाएं पर इन सबका मुकाबला नही कर सकते। क्यों सही कह रही हूं न?

अभी हाल ही में एक पारिवारिक विवाह समारोह में मसूरी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विवाह एक बड़े होटल में रखा गया था। यानी डेस्टिनेशन वेडिंग। डेस्टिनेशन वैडिंग मतलब जिसमें दूल्हा और दुल्हन पक्ष एक ही होटल में ठहरते हैं और सभी रस्में वही पर निभाई जाती हैं। जिसमें शामिल होने का ये मेरा प्रथम अनुभव था। मन में कई सवाल भी थे। जैसे कि कहीं यह विवाह हमारे रीति रिवाजों के अनुरूप होगा या सभी मान्यताओ को दरकिनार कर आधुनिकता के रंगों में रंगा होगा। खैर मन मे विवाह में शामिल होने की खुशी और कुछ प्रश्न लिए हम पहुँच गए मसूरी। होटल शानदार था।

अगली सुबह हल्दी हाथ की रस्म के साथ विवाह की रस्मों की शुरुआत हो गयी। सभी महिलाएं पीली साड़ी और अपने परंपरागत गहने पहनकर फ्योंली के फूल की तरह नज़र आ रही थी। परंपरा, संस्कार व सुंदरता का अनूठा रूप दिखाई दे रहा था। बांद (दुल्हन को हल्दी लगाना) की रश्म चल रही थी। एक तरफ महिलाएं मंगल गीत गा रही थी। वही दूसरी ओर ढोल–दमारू एवं नरसिंघा (पहाड़ी वाध्ययंत्र) की धुन बज रही थी। कभी "बेडु पाको बारामासा" कुमाऊँनी गीत तो कभी गढ़वाली गीत "फ्योलड़िया" गाया जा रहा तो, दूसरी तरफ "घोटा सिमनिया" जौनसारी गीत, पर कुछ लोग तांदी नृत्य (जौनसारी नृत्य) कर रहे थे और कुछ लोग उसको सीखने की कोशिश कर रहे थे।

दुल्हन सहित कुछ महिलाओं ने कुमाऊँनी पिछोड़ा पहना था, तो कुछ ने देवप्रयागी ओढ़नी पहनी थी। पुरुषों ने कुर्ता पायजामा के साथ जौनसारी टोपी पहनी हुई थी। क्या खूबसूरत नज़ारा लग रहा था। रात को बारात आई, सभी रस्मों के साथ विवाह संपन्न हुआ। हमारी उत्तराखण्डी संस्कृति का ऐसा मिलाजुला और रंग बिरंगा रूप देखकर जो सुखद अनुभूति हुई, उसको शब्दों में बयान करना मुश्किल है।

अगली सुबह का नज़ारा देखकर यकीन नही हुआ। डोली....... , दुल्हन की विदाई के लिए डोली सजाई गई थी। डोली की रस्म जो कि लुप्त हो चुकी थी वहां देखने को मिली। बड़ा अच्छा लगा। जब डोली उठी सभी की आँखे नम थी और दादी, नानी, ताई चाची द्वारा उडद की दाल और चावल दुल्हन के ऊपर से उच्याकर (घुमाकर) चारों दिशाओ में समर्पित कर दिए गए जो कि एक रिवाज ही है। मश्क बाजे की विदाई धुन के साथ दुल्हन विदा हो गयी।

कहते है कि संस्कृति लुप्त हो रही है। लेकिन मेरा मानना है कि हमारी संस्कृति कभी लुप्त नही होती बल्कि एक नए रूप और नए अंदाज के साथ हमारे साथ ही रहती है। हमारे पारम्परिक रीति–रिवाज आधुनिकता के मिश्रण के साथ फिर से हमारी संस्कृति को ओर भी अधिक खूबसूरती के साथ जीवंत कर रहे हैं। साथ ही साथ उसमें गढ़वाली, कुमाऊंनी एवं जौनसारी संस्कृति का समावेश हमारी अनूठी संस्कृति को इंद्रधनुषी रंग प्रदान कर रहे हैं।

अपनी बोली, भाषा, रहन सहन, पहनावा, रीति–रिवाज हमारी पहचान है तथा ये हमारा आत्म सम्मान भी हैं। इनका मान करने के साथ–साथ इनको अधिकाधिक अपनाकर प्रचार–प्रसार करें ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को एक सुंदर और संस्कृति के अलग–अलग रंगों से सजा, सादगी और सुंदरता से परिपूर्ण उत्तराखंड मिल सके ।।

लेख

देवतुल्य वृक्ष - पीपल

बी.पी. डोभाल
अभिलेख अधिकारी, मुख्य अभिलेख कार्यालय, ऋषिकेश

हिन्दू धर्मग्रंथो में लिखा गया है कि "हरि अनंत हरि कथा अनंता" इस तरह से हमारे ग्रंथ बताते हैं कि संपूर्ण जगत के कण–कण में सर्वशक्तिमान प्रभु ही व्याप्त है। यही शक्ति ही आस्था को बल देती है। हिन्दू धर्म में पीपल को देववृक्ष माना गया है। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में कहा गया है कि द्वापर युग में परमधाम जाने से पूर्व योगेश्वर श्री कृष्ण इसी पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान में लीन हुए थे। भारतीय संस्कृति में पीपल के वृक्ष को देववृक्ष माना गया है। इसके सात्विक प्रभाव के कारण ही इसके स्पर्श मात्र से चेतना पुलकित हो जाती है। यह वृक्ष प्राचीनकाल से ही भारतीय जनमानस में पूजनीय रहा है। ग्रंथो में पीपल के वृक्ष को प्रत्यक्ष देवता माना गया है व आस्था है कि इसमें देवताओं का वास होता है। इस वृक्ष के औषधीय गुण भी बहुत महत्वपूर्ण है, इसका कोई भी हिस्सा ख़राब नही जाता है, सबका अपना–अपना औषधीय व पूजनीय महत्व है। पीपल की लकड़ी में कभी भी कीड़ा नही लगता है।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि "अश्वत्थः सर्वृक्षानाम" अर्थात समस्त वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ। यह कहकर श्रीकृष्ण ने पीपल को अपना निवास बतलाया। इसीलिए पीपल के पत्तों को पूजा सामग्रियों में स्थान दिया जाता है व पीपल को समूल काटना वर्जित समझा जाता है। शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि "अश्वत्थः पूजय्तोयत्र पूजताः सर्व देवताः" अर्थात पीपल की सविधि पूजा अर्चना करने से सभी देवताओं का पूजन हो जाता है। अर्थववेद में भी कहा गया है कि–"अश्वत्थः देव सदनः" अर्थात पीपल के वृक्ष में देवताओं का निवास होता है। स्कन्दपुराण में वर्णन है कि पीपल के वृक्ष के मूल में विष्णु तने में केशव शाखाओं में नारायण व फलों में सभी देवताओं का वास होता है। इसीलिए हमारे हिन्दू धर्म में पीपल का वृक्ष अत्यंत पूजनीय माना जाता है।

भगवान बुद्ध का "बोध–निर्वाण" पीपल की घनी छाव से ही संबंधित है व गया में इसी वृक्ष के नीचे ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस वृक्ष के मूल में बैठकर ऋषि मुनि सदैव पूजा अर्चना पाठ मंत्रों जाप व पठन–पाठन आदि शुभ कार्य किया करते थे। पीपल के वृक्ष के नीचे किये गये अनुष्ठान अक्षय होते हैं। अथर्ववेद के उपवेद आयर्वेद में वर्णित किया गया है कि पीपल वृक्ष की रोज तीन परिक्रमा करने, जल चढ़ाने व दर्शन मात्र करने से असाध्य रोग भी दूर हो जाते हैं, यह औषधियों की खान माना गया है।

चाणक्यकाल में पीपल के पत्तों से सर्पदंश का भी इलाज किया जाता था इसलिए चाणक्य ने जगह–जगह पीपल के वृक्ष लगवाए व उनके पत्तों से पानी का शुद्धिकरण भी किया जाता था, जिन्हें बड़े–बड़े तालाबों जलाशयों में डाल दिया जाता था। इसी का परिणाम है कि प्राचीनकाल में कुओं के समीप पीपल के वृक्ष लगाये जाते थे जिसका प्रमाण हड़प्पा काल के सिक्कों में बनी आकृति से भी मिलता है। पीपल के वृक्ष में औषधीय गुण तो होते ही है, यह पर्यावरण में भी बहुत सहायक होता है। यह एकमात्र ऐसा वृक्ष है जो रात व दिन में भी ऑक्सीजन का विसर्जन करता है। हमारे जीवन में ऑक्सीजन का क्या महत्व है, यह हाल में कोरोना काल की त्रासदी में संपूर्ण विश्व ने देखा है। यह ध्यान में रहते हुए हमारे पूर्वज मंदिरों में, गावों में, चौराहों में बहुतायत मात्रा में पीपल लगाया करते थे। हमारी सरकारों को भी चाहिए कि पर्यावरण के गिरते स्तर को देखते हुए पर्याप्त मात्रा में पीपल के वृक्ष लगवाएं।

हमारा दुर्भाग्य ही है कि हमारे देश की वैभवशाली परम्पराएं छोड़कर हम पश्चिमी सभ्यता को अपना रहे हैं जो कि निपट खोखली व आधारहीन है जबकि खुद पश्चिमी सभ्यता के लोग भारतीयता को अपना रहे हैं। हमें अपनी सभ्यता व परम्पराओं को सुदृढ़ करना है तभी हमारा देश पुनः "विश्व गुरु" की राह पर अग्रसर होगा।

स्वास्थ्य परिचर्या

योगश्च चित्त -वृत्ति निरोधः भाग-3

दिलवर सिंह पंवार
उप अधिकारी, एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

पिछले दो लेख में योगश्च चित्त–वृत्ति निरोधः के अंतर्गत पंतजलि अष्टांग–योग के पांच सोपान–यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार पर चर्चा की गई। वह हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखती है, जिससे व्यक्ति अनुशासित जीवन व्यतीत कर स्वयं व समाज की भलाई में योगदान करता है। शेष तीन अंग–ध्यान, धारणा और समाधि जो हमारे जीवन को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाते हैं और हम परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं, यही योग का मूल उद्देश्य है।

धारणाः अष्टांग योग में धारणा छटा चरण है। किसी उपलब्धि के लिए विचार और व्यवहार की दृढ़ता धारणा कहलाती है। मूल स्वभाव से किसी व्यवस्था की सहज स्वीकृति व उसके अनुरूप आचरण भी धारणा ही है जिसका स्थान प्रत्याहार के बाद आता है। प्रत्याहार इंद्रिय–संयम में दक्षता है। स्वभावतः इंद्रियां बहिर्मुखी होती हैं और बाहरी संवेदनाओं से मन को प्रभावित करती हैं। जब इंद्रियों का संयम होने लगता है तो मन की संकल्प और शक्ति (धारणा) स्वतः ही बढ़ने लगती है। इसलिए धारणा को दृढ़ करने से पहले प्रत्याहार की सफल साधना बहुत आवश्यक है, इसके लिए ज्ञानेंद्रियों की तन्मात्रा और कामेंद्रियों की क्रियाशक्ति का नियमन आवश्यक है। इंद्रियों के द्वारा जो रसानुभूति होती है और मन उसे बार–बार भोगना चाहता है, इन इंद्रियों एवं मन की भोग–वृत्ति का नियम प्रत्याहार है। प्रत्याहार के बाद ही धारणा शक्ति से शिव–संकल्प लिए जाते हैं जिससे साधक में त्याग, स्वाध्याय, आत्मीयता, मैत्री, करुणा, दया, क्षमा, ईश–प्राणिधान जैसे दिव्य गुण सहज ही आ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति हमेशा समाज की भलाई में लगा रहता है। मनुष्य को निराभिमानी, बंधन–मुक्त जीवन का अनुकरण करना चाहिए और ऐसी धारणा करे कि सहज जीवन यापन हो और अंत में अपने उद्‌गम–स्रोत परमात्मा में सहज समाधि ले सके।

जीव का अपना स्वरूप आत्मा है, शरीर या इसकी व्यवस्थाएं नहीं। निर्मल चित्त की चेष्टा अपने स्वरूप के साथ मिलने की ही होती है। अतः मनीषी इस स्तर पर मानसिक विश्लेषण करता है और सत्य की अनुभूति कर लोक–कल्याण हेतु जीवन का उपयोग करता है और सफल जीवन जीता है। इस उद्देश्य पूर्ति में अनेक प्रकार के तप स्वतः ही हो जाते हैं और जीवन की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। तभी महात्माओं ने मनुष्य जीवन का केवल एक ही उद्देश्य बताया–ब्रह्म अनुभूति। इस उद्देश्य पूर्ति में धारणा का विशेष महत्व है।

ध्यानः मन जिस विचार या स्थिति पर निरंतर केंद्रित हो अर्थात केवल उसी का चिंतन करे, वही ध्यान है। यह सामान्य परिभाषा है। ध्यान क्रिया नहीं मन की अवस्था है। वास्तव में अध्यात्म के अनुसार मन में केवल ब्रह्म जिज्ञासा हो और चितंन भी उसी का हो, वही ध्यान है। मन स्वभाव से बहुत चंचल है और बहिर्मुखी भी है। बाहरी जगत हर पल परिवर्तनशील है। चंचल मन द्वारा परिवर्तनशील जगत का चिंतन मन को और अधिक अस्थिर कर देता है। मन में अनेक कामनाएं (संसार से चाहत) उत्पन्न होती हैं। यदि ये पूर्ण न हों, तो मन में तनाव हो जाता है और मन अस्थिर हो जाता है। मनुष्य जीवन जो आनंद अनुभूति (ब्रह्म) के लिए मिला है, कष्टमय होकर निरर्थक हो जाता है। मनुष्य को चाहिए कि वह मन को परमात्म चिंतन की उत्तम व्यवस्था देने का विचार करे। साधु–संगति, सत्संग, शास्त्र अध्ययन मनन व चिंतन, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान अवश्य करे तभी निरंतर अभ्यास से मन का निग्रह होगा और ध्यान तभी घटित होगा। यह एक उत्तम व्यवस्था है।

''यथा दीपो निवातस्थो नेंगते सोपमा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः'' (गीता–6/19)

''जिस प्रकार वायु रहित स्थान में दीपक हिलता डुलता नहीं, उसी तरह जिस योगी का मन वश में होता है, वह आत्म/तत्व के ध्यान में सदैव स्थिर रहता है।

मन बहुत शक्तिशाली है। यह मन ही शरीर धारण करने का कारण है। यही मन संसार की कल्पना या ब्रह्म जिज्ञासा रखता है; अर्थात विचार के स्तर पर सारी कल्पनाएं व रचना मन ही करता है। कर्म भी विचार से

किसी बच्चे को अपने सीखने के लिए सीमित न करें, क्योंकि वह किसी अन्य समय पैदा हुआ था – **रवींद्रनाथ टैगोर**

शुरू होता है। अतः कर्म का कारण भी मन है। जगत और जगत के व्यवहार रूपी कीचड़ में कमल भी पैदा होता है जो सुंदर (आकर्षक) भी है और कीचड़ से अछूता भी रहता है। पुष्पवत आकर्षक मन (कमलवत) भी हो सकता है; मनुष्य को इसका प्रयास करना चाहिए। गीता में भगवान ने मार्ग सुझाया–मनुष्य इस संसार में व्यवहार करते हुए भी मन को सांसारिक विषयों से अनासक्त रखते हुए परमात्मा में लगा सकता है। जैसे कछुआ अपने समस्त अंगों को सुरक्षित रखने के लिए ऊपर से कठोर कवच में सिकोड़ लेता है, उसी प्रकार मनुष्य व्यवहार (पुरूषार्थ) तो जगत में करे, परंतु मन को परिष्कृत करने के लिए परमात्म–भाव में सिमेटता रहे; ऐसे निरंतर अभ्यास (प्रयास) से ध्यान स्वतः घटित हो जाता है।

**''यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेऽभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता
(गीता–2/58)**

''जैसे कछुआ सब ओर से अपने अंगों को समेट लेता है, वैसे ही जब यह पुरूष इंद्रियों के विषयों से इंद्रियों को सब प्रकार से हटा लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर होती है।''

हमेशा पूर्ण विश्राम अपने स्रोत (स्वरूप) में ही हो सकता है। मन का स्रोत (उद्गम) ब्रह्म है, अतः मन को विश्राम व शांत अवस्था में स्थित करने के लिए मन द्वारा केवल ब्रह्म का ही चिंतन–मनन होना चाहिए; यही ध्यान की स्वतः घटित होने वाली उत्तम अवस्था है।

समाधि

सम + धि..........बुद्धि की सम अवस्था

वृत्ति विहीन शांत चित्त की अवस्था समाधि है। यहां बुद्धि को निर्णय के लिए कुछ शेष रहता नहीं। जब स्थूल और सूक्ष्म शरीर में बुद्धि से स्थूलतर अवस्थाएं सहज या स्वस्थ हो तो बुद्धि अपने आप में शांत रहेगी अर्थात सम रहेगी। स्थूलतर अवस्थाओं से आशय–जैसे स्थूल शरीर और इसकी व्यवस्थाओं (प्रणालियों) का स्वस्थ होना अर्थात शरीर रोगरहित हो और इसके सभी अंग एवं प्रणालियां सुचारू रुप से व्यवस्थित होकर कार्य करें; ताकि ज्ञानेन्द्रियों से ग्रहण की जाने वाली संवेदनाएं इतनी कम हो, कि ये मन को कम से कम विक्षेपित (अशांत) करें तो बुद्धि को निर्णय लेने के लिए कुछ होगी ही नहीं क्योंकि बुद्धि निर्णय लेती ही मन के विचारों पर है।

बुद्धि की विक्षिप्त अवस्था (असमाधि) के कारण का विचार कर उसका समाधान ढूंढना चाहिए। सामान्य व्यक्ति केवल शरीर और संसार का ही चिंतन करता है तो उसका मन उसमें ही उलझा रहता है। उलझने से आशय, मन का निःस्सार विचारों में निरंतर लगे रहना। कैसे? शरीर और संसार हर पल बदलते रहते हैं; अनित्य हैं, अस्थिर हैं, नाशवान है। नाशवान का चिंतन करके मन में भी अस्थिरता बढ़ती है और अशांत होता है। अनित्य से मन में आसक्ति हो जाने पर शोक होता है। जानते हुए भी उलझन में फंसना अज्ञान है, भ्रम है। तो भ्रमयुक्त मन से प्रभावित बुद्धि संशयात्मक (अस्थिर) होती है जो असमाधि की अवस्था है। हमें अपनी बुद्धि को स्थिर या शांत करने का मार्ग चुनना चाहिए। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं –

''तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः। वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता'' (गीता–2/61)

''साधक को चाहिए कि वह उन संपूर्ण इंद्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण होकर ध्यान में बैठे, क्योंकि जिस पुरूष की इंद्रियां वश में होती हैं, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है।''

अतः मन को इंद्रियों और उनके विषयों से हटाकर नित्य (शाश्वत या ब्रह्म) के साथ युक्त करने का मार्ग मनुष्य को अपनाना चाहिए। यह अध्यात्मिक मार्ग, साधना, सत्संग, स्वाध्याय, संत संगति, शास्त्र अध्ययन आदि पर आधारित हो सकता है। इनके अभ्यास से अनित्य से वैराग्य हो इंद्रिय व मनोनिग्रह हो जाता है; जिसके परिणामस्वरूप बुद्धि विक्षेप रहित (शांत) हो जाती है यही अवस्था समाधि है।

हिंदी अनुभाग की ओर से......

उत्कृष्ट लेखों के लेखकों हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की प्रोत्साहन योजना

केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना से बढ़ाया जाना है। इस परिप्रेक्ष्य में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई है। इन प्रोत्साहन योजनाओं में केन्द्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लेखकों हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शामिल है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 25 मार्च, 2015 के संकल्प सं. 11034/48/2014–रा.भा. (नीति) एवं समय–समय पर जारी संशोधन के अनुपालन में यह योजना चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष कार्यालय ज्ञापन जारी कर प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती हैं एवं विजेता अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

योजना का उद्देश्य

केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/बैंकों आदि द्वारा राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रचार–प्रसार के लिए आवधिक हिंदी पत्रिकाएं प्रकाशित की जा रही है। केंद्र सरकार के कार्मिकों द्वारा पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लेखकों हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं ताकि राजभाषा में लेख लिखने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जा सके और पाठकों को अच्छे लेख पत्रिकाओं में पढ़ने के लिए उपलब्ध हो सकें।

पात्रता

(क) केंद्र सरकार के कार्यरत अथवा सेवानिवृत्त कार्मिक।

(ख) लेख किसी भी सरकारी संस्था की पत्र–पत्रिकाओं में वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च) में प्रकाशित होने चाहिए।

(ग) हिंदी भाषी लेखक उन अधिकारियों/कर्मचारियों को माना जाएगा जिनका घोषित निवास स्थान ''क'' या ''ख'' भाषाई क्षेत्र में स्थित हो।

(घ) हिंदीतर भाषी लेखक उन अधिकारियों/कर्मचारियों को माना जाएगा जिनका घोषित निवास स्थान ''ग'' भाषाई क्षेत्र में स्थित हो।

(ङ.) पुरस्कार वितरण के लिए नियत स्थान से बाहर से आये हुए पुरस्कार विजेताओं को बुलाए गए स्थल पर आने जाने के लिए रेल का द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित का किराया भारत सरकार के नियमों के अनुसार दिया जाएगा। ठहरने की व्यवस्था स्वयं अपने खर्चे पर करनी होगी।

पुरस्कार

विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों को निम्नलिखित नकद पुरस्कार के साथ–साथ शील्ड एवं प्रमाण पत्र दिये जायेंगे।

	हिंदी भाषी	हिंदीतर भाषी
प्रथम पुरस्कार	20,000/–रु.	25,000/–रू.
द्वितीय पुरस्कार	18,000/–रु.	22,000/–रु.
तृतीय पुरस्कार	15,000/–रू.	20,000/–रु.

मूल्यांकन प्रक्रिया

प्रत्येक मंत्रालय/विभाग अपने स्तर पर तीन–तीन लेखों का चयन करेगा। इस चयन के लिए हिंदी प्रभारी के द्वारा संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में समिति का गठन किया जाएगा। मंत्रालय/विभाग इन चयनित लेखों को अनुलग्नक ''क'' में दिए गए प्रपत्र में विवरण सहित राजभाषा विभाग को भेजेंगे। राजभाषा विभाग मंत्रालयों/विभागों से प्राप्त लेखों का मूल्यांकन समिति द्वारा समीक्षा करवाकर हिंदी व हिंदीतर भाषियों के लिए तीन–तीन पुरस्कारों का चयन करेगा।

अनुलग्नक–क

क्रम सं.	नाम (हिंदी व अंग्रेजी में)	पदनाम	आधार कार्ड नं.	श्रेणी (हिंदीभाषी / हिंदीतर भाषी)	कार्यालय का पता	लेख का विषय	पत्रिका का नाम	पत्रिका का अंक	संपर्क सूत्र/ फोन/ ई–मेल आदि	टिप्पणी
1										
2										

कार्यालय प्रमुख के हस्ताक्षरः
कार्यालय का नामः
दूरभाष/मोबाइल नं.

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावानः निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा–हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

कविता

हमको बिहारी आ गयी

सेंधमारी, मालमारी, यारमारी आ गयी,
तो समझिये आपको भी दुनियादारी आ गयी।

दोस्ती से बेहतर शै कुछ न थी उनके लिए,
बीच में फिर एक दिन उनके उधारी आ गयी।

ये कुटा, वो कुटा और वो कुट ही गया,
पुरसुकुं जब हो गये तो अपनी बारी आ गयी।

बेठने की ना लियाकत बोलने का क्या शऊर,
वार्ड मेम्बर हो गया तो थानेदारी आ गयी।

नौकरी करने पिताजी दूर दादा से हुए,
और फिर उनकी तरह अपनी फरारी आ गयी।

शक्ति ड़ा को रा वो कहता खूब समझाया मगर,
वो न समझा माँ कसम हमको बिहारी आ गयी।

– अवधेश चन्द्र गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (नियोजन), कोटेश्वर

कविता

मेरी खुशियाँ, मेरे सपने

मेरी खुशियाँ, मेरे सपने
मेरी खुशियाँ, मेरे सपने,
मेरे बच्चे, मेरे अपने।
यह कहते–कहते शाम हुई,
इससे पहले की शाम ढले।
कुछ दूर परायी बस्ती में,
इक दिया जलाना बाकी है।
तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

हम सुधरे तो जग सुधरेगा

हम सुधरे तो जग सुधरेगा।
झांक रहे है इधर–उधर सब।
अपने अंदर झांके कौन।।
ढूंढ रहे दुनिया में कमियां।
अपने मन में ताके कौन?
दुनिया सुधरे सब चिल्लाते।
खुद को आज सुधारे कौन?
पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
खुद पर आज विचारे कौन?
हम सुधरे तो जग सुधरेगा।
यह बात स्वीकारे कौन?

– अवधेश चन्द्र गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (नियोजन), कोटेश्वर

शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों का नहीं बल्कि मूल्यों का ज्ञान है – **विलियम राल्फ इंज**

कविता

बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ

बेटी बचाओ–बेटी बचाओ,
हम रोज यही पढ़ते रहते,
पर हर बेटी कह जाती है,
बस बात यही मरते–मरते।

कलयुग है कृष्ण ना आएंगे,
अब चीर बढ़ा ना पाएंगे,
कब तक देखोगी तुम ऐसे,
इस अस्मत को लुटते–लुटते।

मैं कैद कहां कर लूं खुद को,
पिंजरे का पंछी हो जाऊं,
डर–डर जीने से बेहतर है,
मैं आज अभी बस मर जाऊं।

ये कहर रुकेगा अब कैसे,
ईश्वर का सर भी झुकता है,
चाहे हम भी तो लाख मगर,
ये पाप कहां कब रुकता है।

हां सही हुआ ये होना था,
कब तक छुप–छुप यूं रोना था,
जग उठे जैसे हम अब,
पहले भी तो ना सोना था।

हे मानव बस थम जा तू,
देवी क्रोधित हो जाएगी,
खाली होगा हर घर आँगन,
जिसमें पायल की छम–छम है,
खाली होंगे बाजार सभी,
जिसमें चूड़ी है कंगन है,

मेंहदी का कोई मोल नहीं,
कोई शहनाई कोई ढ़ोल नहीं,
ना दुल्हन ना डोली होगी,
ना दीपक ना होली होगी।

बेटी ही घर की रौनक है,
बिन बेटी सूना सा आँचल,
ये हर माँ की परछाई है,
हर दुख का छटता सा बादल।

बस इतनी सी है आस मेरी,
हर रोज यही फरियाद मेरी,
कोई डर कोई खौफ ना हो,
इन कदमों पर कोई रोक ना हो।

फिर आसमान को छू लें हम,
खुशियों के झूले झूलें हम,
मिलता यह जीवन एक बार,
आओ खुलकर अब जी लें हम।

आओ खुलकर अब जी लें हम।

– **अर्चना पांडेय**
सुपुत्री श्री अनिल कुमार पांडेय
उप अधिकारी, एनसीआर कार्यालय कौशांबी

कविता

कोरोना की आपबीती

कोरोना ये महामारी कैसी विकराल बीमारी।
पूरे विश्व में फैली अचानक यह महामारी।
हे प्रभु कैसी लीला है तुम्हारी।
कहां से आई यह अजीबोगरीब महामारी।

भारत में जब आई थी यह विकराल महामारी।
सुनसान हो गई थी शहर गांव की गलियां सारी।

जरा सी क्या हुई बुखार और खांसी।
बंदे ने सोचा लो आ गई बारी हमारी।

परिवार वाले ऐसे देखते जैसे पाप हो गया।
डाक्टर के पास जाओ तो तमाशा हो गया।

डाक्टर बोलते लक्षण है तुम्हारे कोरोना वाले।
टेस्ट जल्दी कराओ नही तो संकट में है प्राण तुम्हारे।

मरते क्या न करते भागे टेस्ट कराने।
सब परिवार वाले बैठ गए मंदिर में पूजा कराने।

दोस्त, रिश्तेदार सबके आने लगे संदेश बार–बार।
न करो कोई चिंता प्रभु करेंगे नैया पार।

रिपोर्ट आएगी आपकी सौ प्रतिशत नेगेटिव।
सो जाओ अब मस्त, होगा सब पाजिटिव।

नींद किसे आनी थी रिपोर्ट की थी चिन्ता।
कोरोना हो गया तो कितनी होगी विपदा।

जैसे तैसे रात करवटें बदलते बीती।
कैसे बताऊं दोस्तों कितनी भयावह वो रात बीती।

अचानक फोन पर डाक्टर की घंटी बजी।
कोरोना पॉजिटिव खबर से पूरे घर में खलबली मची।

पूरा परिवार ऐसे कर रहा था विलाप।
जैसे लेने आ गये हों यमराज साक्षात।

मैं सदमे में रहते हुए परिवार को दे रहा था दिलाशा।
मैं जल्दी ठीक हो जाऊंगा रखो ऐसी आशा।

थोड़ी देर में हम हो गये आम से खास।
डाक्टर, प्रशासन, प्रबंधन सभी के पास,

नाम हो गया हमारा प्रकाश।
फोन आने लगे हमारे पास कि कर लो तैयारी।

टीम आपको लेने आ रही है,
चूंकि कोरोना सेंटर में है अब आपकी बारी।

अब आपको घर न रहके,
कोरोना सेंटर में ही रहना होगा।

वहीं का खाना और पानी पीना होगा।
हमने दोस्तों हिम्मत नही हारी।

करके 15 दिन की तैयारी।
पहुंच गए कोरोना सैंटर करके मन भारी।

कैसे बताऊं कैसे बीता वहां समय हमारा।
कैदी जैसे खाना और नीरस जीवन हमारा।

रोज ऐसे लगता कि यमराज है पास हमारे।
कब ले जाएंगे कुछ पता नही हर के प्राण हमारे।

प्रभु कृपा और दोस्तों की
शुभकामनाओं ने रंग दिखाया।

कोरोना सैंटर से 15 दिन बाद स्वस्थ होकर,
मैं घर वापिस आया।

– राजीव जैन
वरिष्ठ प्रबंधक
कॉरपोरेट गुणवत्ता आश्वासन, ऋषिकेश

क्षणिकाएं

मायूस जिंदगी

लम्हें गुजर रहे हैं,
और दिन भी ढल रहे हैं,
बेचैनियाँ बढ़ रही हैं,
मायूस हम खडे हैं।
किसकी नजर लगी हैं,
हमारे प्यारे जहाँ को,
हंसती मुस्कराती,
जिन्दगी में,
मायूसी छा गई है।
शहर सूने गलियाँ सूनी,
बाजार बेरौनक खड़े हैं,
कहाँ से कहाँ आ गये,
बेचैन से हम खड़े हैं।

नये जमाने आयेंगे

नये जमाने आयेंगे,
बदलाव भी साथ में लाएंगे।
बदले–बदले हम तुम होंगे,
पास नही अब दूर हम होंगे।
चेहरे नही मुस्कुराएंगे,
मास्क से छिप जायेंगे।
हम हाथ नही मिलायेंगे,
औपचरिकता निभाएंगे।
एक दूसरे को दूर से ही चाहेंगे,
रेस्टोरेंट न पार्क होगा,
ख्यालात में ही आएंगे।
बदली–बदली सी चाहत होगी,
बदले–बदले से हम तुम होंगे।

जीवन की डगर

पथरीली सी राह डगर,
मुड़ती झुकती गाँव शहर,
उस ठौर कहीं मुड़ जाती है,
खड़े मिले जिस राह गुजर।
बचपन के प्यारे साथी हैं,
कुछ अर्थ लिए कुछ भेद लिए,
बचपन के किस्से ढेर लिए,
कुछ उलझे से कुछ सुलझे से।
कुछ गाँव गए कुछ शहर गए,
सारे के सारे दूर हुए,
पथरीली सी उन राहों में,
मुड़ती झुकती जो गाँव शहर।

फूल पलाश का

तुम फूल पलाश के बन जाओ,
मैं ऋतु बसंत की हो जाऊं,
तुम सावन का बादल,
मैं भूमि मरूस्थल की बन जाऊं।
तुम धूप घनेरी हो जाओ,
मैं वृक्ष की छाया बन जाऊं,
तुम रात अंधेरी सी छाओ,
मैं चाँद पूनम की बन जाऊं।
तुम खुशबू से महको हर दम,
मैं मस्त हवा सी बन जाऊं,
तुम कोयल मैं मंजरी आम की,
फूल पलाश का तुम।
मैं खुशबू तुम्हारी बन जाऊं,
तुममें मैं और मुझमें तुम,
फूल पलाश के बन जाएं।

– सीमा बिजल्वाण
धर्मपत्नी श्री जे.पी. बिजल्वाण
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), ऋषिकेश

यदि कोई व्यक्ति शिक्षा की उपेक्षा करता है, तो वह अपने जीवन के अंत तक लंगड़ा चलाता है – **प्लेटो**

कविता

डरी-डरी सी क्यों है मुनिया

डरी–डरी सी क्यों है मुनियां,
तु क्या देख घबराई है,
काले साये से कुछ बादल देख राह में आई है।
डरी नही सहमी हूँ अम्मा अपने ही साये से मैं,
छिपा रही थी खुद को नकाब के साये से मैं,
आबो हवा बाहर की देख मैं कुछ घबराई हूँ।
क्यों छिपा है आदमी–आदमी से,
ये समझ ना पाई हूं।
सदियों में आयी सूक्ष्म सी काली सी ये काया है,
वक्त भी देख जिसे घबराया है,
सूक्ष्म सा ये जीव दुनिया में अम्मा कैसे आया है,
खेल खिलौने साथी प्यारे सब पर ये आकर छाया है।
साथी मेरे छिपे नकाब में अम्मा नही पहचान में आते हैं,
बबलू पिंकी बिटू सब एक ही नजर आते हैं,
कब खेलेंगे अम्मा कब स्कूल जायेंगे।
खिली उम्मीद की एक किरन है मुनिया,
जल्दी ही वो आयेगी
फिर से तु हरषायेगी।

– सीमा बिजल्वाण
धर्मपत्नी श्री जे.पी.बिजल्वाण
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), ऋषिकेश

कविता

प्रणाम है

धरती मां पर हुए जो बलिदान हैं,
सरहद ही जिनकी कर्म भूमि,
सरहद ही जिनकी आन है,
उन सभी वीर जवानों को,
हम सबका कोटि–कोटि प्रणाम है।
लाख नसीबों वाले हैं वो,
जिनके हिस्से आता ये बलिदान है,
सरहदों पर खड़े हमारे उन वीर जवानों को,
हम सबका कोटि–कोटि प्रणाम है।
अपनी नींदों को त्याग कर जो,
हमें चैन की नींद सुलाते हैं,
घात लगाये बैठा दुश्मन, सीमा पर,
उनसे यह वीर भिड़ जाते हैं,
सरहदों पर खड़े हमारे उन वीर जवानों को,
हम सबका कोटि–कोटि प्रणाम है।

– कु. राखी पुत्री श्री विनोद कुमार
महाप्रबंधक (परियोजना) कार्यालय, कोटेश्वर

हिंदी दिवस समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार कोविड–19 के दृष्टिगत हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए गए सभी कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में कोविड–19 प्रोटोकॉल का पालन किया गया।

हिंदी दिवस समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन

हिंदी दिवस समारोह का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में हिंदी दिवस समारोह धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर 14 से 28 सितंबर, 2021 तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन भी किया गया।

समारोह में विशिष्ट अतिथि महाप्रबंधक (आर एंड डी), श्री अतुल कपूर एवं महाप्रबंधक (व्यवसाय विकास), श्री प्रवीण सक्सेना के साथ–साथ उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना/हिंदी), श्री ईश्वर दत्त तिग्गा एवं उप महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति/केंद्रीय संचार), डॉ. ए.एन. त्रिपाठी तथा कारपोरेट कार्यालय के अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना/हिंदी) ने पुस्तक एवं पुष्प भेंट कर विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के बारे में पूरी जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

समारोह में माननीय केंद्रीय सहकारिता एवं गृहमंत्री, श्री अमित शाह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी अपील सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पढ़कर सुनाई गई तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई ।

कोविड–19 प्रोटोकॉल के दृष्टिगत सुरक्षा की दृष्टि से एक ही स्थान पर कर्मचारियों को एकत्र न करते हुए कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों में विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों ने अपने–अपने विभागों में कर्मचारियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील पढ़कर सुनाई और राजभाषा प्रतिज्ञा कराई। हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता की।

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस क्रम में 14 सितंबर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय ''नई शिक्षा नीति–2020 हिंदी के विकास में कितनी सहायक'' रखा गया था। 15 सितंबर को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 16 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता, 17 सितंबर को काव्य–पाठ प्रतियोगिता, 20 सितंबर को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय ''सोशल मीडिया समाज के विकास में सहायक–पक्ष/विपक्ष'' रखा गया।

21 सितंबर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए राजभाषा ज्ञान एवं सामान्य हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा 22 सितंबर को कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों के लिए अलग–अलग हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कारों की घोषणा

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संबोधित करते महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कारों की घोषणा 28 सितंबर, 2021 को कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वीर सिंह, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने की। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, हिंदी नोडल अधिकारी तथा सभी पुरस्कार विजेता वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े हुए थे। कार्यक्रम के संचालन कक्ष में श्री आई.डी. तिग्गा, उप महाप्रबंधक (मा.सं.– स्थापना हिंदी), श्री एन.के. भट्टाचार्य, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) तथा मा.सं.– स्थापना एवं वित्त एवं लेखा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ–साथ हिंदी अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के शुभारंभ पर वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा), श्री वीर सिंह एवं समस्त उपस्थित विभागाध्यक्षों/अनुभाध्यक्षों तथा प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। श्री शर्मा ने महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अनुमति से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की गई जिसके अंतर्गत 30 जून को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विभागों/अनुभागों में हिंदी की प्रगति की समीक्षा की गई। इसके बाद हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया गया तथा पुरस्कारों की घोषणा की गई।

दिनांक 14.09.2021 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी)–प्रथम, श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि. प्रबंधक (मा.सं.– नीति)–द्वितीय, श्रीमती शीला देवी, उप अधिकारी (संविदा)–तृतीय रहे। साथ ही श्रीमती रूचि हांडा, वरि. अभियंता (वाणिज्यिक) एवं श्री वी.के. शर्मा, वरि. प्रबंधक (सर्विसेज–विद्युत) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 15.09.2021 को आयोजित हुई नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री राजीव जैन, वरि. प्रबंधक (गुणवत्ता आश्वासन)–प्रथम, श्री विनय कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (विधि एवं माध्यस्थम)–द्वितीय, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–प्रशा.)–तृतीय रहे। साथ ही श्री जी.एस. चौहान, वरि. प्रबंधक (लागत अभियांत्रिकी) एवं श्री सुजीत कुमार पाण्डे, वरि. प्रबंधक (सर्विसेज) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 16.09.2021 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–नीति)–प्रथम, श्री सुजीत कुमार पाण्डे, वरिप्रबंधक (सर्विसेज)–द्वितीय, श्री धर्मेन्द्र सिंह भाटी, उप प्रबंधक (विधि एवं माध्य.)–तृतीय रहे। साथ ही श्री रवि बुढ़लाकोटी, उप प्रबंधक (आद्यो.अभि.) एवं श्री प्रताप सिंह चौधरी, वरि. प्रबंधक (संविदा) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

स्थापना विभाग के अधिकारियों को चल राजभाषा वैजयंती प्रदान करते महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह

दिनांक 17.09.2021 को आयोजित हुई हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में श्री एस.के. चौहान, उप महाप्रबंधक (परिकल्प सिविल)–प्रथम, श्रीमती अमिता रस्तोगी, अधिकारी (ओ एंड एमएस)–द्वितीय, श्री राजीव जैन, वरि. प्रबंधक (गुणवत्ता आश्वासन)–तृतीय रहे। साथ ही श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी) एवं श्री जितेन्द्र जोशी, प्रबंधक (प्रशासन–प्रोटोकॉल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 20.09.2021 को आयोजित हुई वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्री जितेन्द्र जोशी, प्रबंधक (प्रशासन–प्रोटोकॉल)–प्रथम, श्री धर्मेन्द्र सिंह भाटी, उप प्रबंधक (विधि एवं माध्य.)–द्वितीय, श्री राजीव सिंह नेगी, उप प्रबंधक (सर्विसेज–संपदा)–तृतीय रहे। साथ ही श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी) एवं श्री बी.पी. डोभाल, उप प्रबंधक (अभिलेख कार्यालय) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 21.09.2021 को टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए आयोजित हुई राजभाषा ज्ञान एवं सामान्य हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्री अर्पण माहेश्वरी, सहा. अनु. अधि., सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की–प्रथम, श्री रवि बुढ़लाकोटी, उप प्रबंधक (आद्यो.अभि.), टीएचडीसी इंडिया लि.,–द्वितीय, श्री अंकुर जैन, उप अधिकारी (वित्त), बीएचईएल, हरिद्वार–तृतीय रहे। साथ ही सुश्री अंजु चौधरी, पी.आर.ए., एन.आई.एच., रुड़की एवं श्री संदीप चौहान, वरि.अभियंता सामग्री योजना, बीएचईएल, हरिद्वार ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 22.09.2021 को कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री जी.एस. चौहान, वरि. प्रबंधक (लागत अभियांत्रिकी)–प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–प्रशासन)–द्वितीय, श्री विनय कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (विधि एवं माध्य)–तृतीय रहे। साथ ही श्री गोविन्द सिंह रावत, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति) एवं श्री रघुवीर सिंह नेगी, प्रबंधक (मा.सं.–प्रशासन) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 22.09.2021 को ही गैर–कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री खुशहाल सिंह राणा, उप अधिकारी (परिकल्प–सिविल)–प्रथम, श्रीमती शीला देवी, उप अधिकारी (संविदा)–द्वितीय, श्री खीम सिंह बिष्ट, उप अधिकारी (मा.सं.–नीति)–तृतीय रहे। साथ ही श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओ.एम.एस.) एवं श्री प्रदीप जैसाली, सहायक (सर्विसेज) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

2020–21 के दौरान विभागाध्यक्ष / अनुभागाध्यक्षों द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कामकाज के अन्तर्गत पुरस्कार योजना के तहत श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना)– प्रथम, डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति/केंद्रीय संचार)–द्वितीय एवं श्री वीरेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक (ओ.एंड एम.एस.)–तृतीय रहे।

हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले विभागाध्यक्षों में श्री वीरेन्द सिंह, महाप्रबंधक (ओ.एंड एम.एस.)–प्रथम (हिंदी भाषी) तथा श्री संदीप सिंघल, महाप्रबंधक (संविदा)–द्वितीय (हिंदी भाषी) ने पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही श्री संदीप रल्लन, प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी)–प्रथम (हिंदीतर भाषी) ने पुरस्कार प्राप्त किया।

मूल रूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण एवं आलेखन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में श्री शिव प्रसाद व्यास, अधिकारी (मा.सं.–स्थापना) एवं श्री जे.एल. भारती, वरि. जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार)–प्रथम (02), श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–नीति), श्री नेकी राम, वरि.कार्य. सचिव (मा.सं.वि.), श्री प्रशांत

चौधरी, वरि. अधिकारी (मा.सं.–आईआर)–द्वितीय (03) तथा श्रीमती नेहा सिसिंगी, उप प्रबंधक (मा.सं.–नीति), श्री विनोद प्रसाद किमोठी, वरि. प्रबंधक (ओ.एंड एमएस), श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–प्रशासन), श्रीमती महक शर्मा, वरि. अधिकारी (मा.सं.–स्थापना) एवं श्री वी.डी. भट्ट, प्रबंधक (मा.सं.–प्रशासन) ने तृतीय (05) पुरस्कार प्राप्त किया।

उत्तरोत्तर प्रगतिगामी चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते वित्त एवं लेखा विभाग के अधिकारीगण

विभागों में हिंदी का कार्यान्वयन देख रहे हिंदी नोडल अधिकारियों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। जिन विभागों के हिंदी नोडल अधिकारियों ने वर्ष के दौरान सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है, उनका चयन पुरस्कार हेतु किया गया।

इस योजनांतर्गत श्री बी.पी. रयाल, अपर महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री नटराजन कृष्णा, उप महाप्रबंधक (परिकल्प – सिविल), श्री पी.सी. रतूड़ी, उप महाप्रबंधक (कारपो. नियो.), श्री एच.सी. उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी), श्री सचेन्द्र दत्त उनियाल, वरि. प्रबंधक (सतर्कता), श्री एस.एस. गुसाई, वरि. प्रबंधक (सर्विसेज–सिविल अनुरक्षण), श्री निरंकार त्यागी, वरि. प्रबंधक (वाणिज्यिक), श्री ललित जोशी, प्रबंधक (कंपनी सचिवालय), श्री शिव प्रसाद व्यास, अधिकारी (मा.सं.–स्थापना) एवं श्री सुरेश उनियाल, उप अधिकारी (औषधालय) को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले मा.सं.–स्थापना विभाग को 2020–21 के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई तथा वित्त एवं लेखा विभाग को उत्तरोत्तर प्रगतिगामी चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई। श्री वीर सिंह, महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.) ने ट्रॉफी के विजेता विभागों के विभागाध्यक्षों एवं अधिकारियों को ट्रॉफी प्रदान की।

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के वर्ष 2020–21 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति/कें.सं.) एवं श्री गौरव कुमार, प्रबंधक (केंद्रीय संचार), ऋषिकेश को उनके लेख ''सोशल मीडिया–सोशल डिस्टेंसिंग के दौर में संवाद का विशिष्ट माध्यम'', श्रीमती विशालाक्षी मालान, उप प्रबंधक (एनसीआर–व्यवसाय विकास) को ''सेफगार्ड ड्यूटी एवं डोमेस्टिक कंटेंट रिक्वायरमेंट–सोलर उद्योग पर इसका प्रभाव व वर्तमान स्थिति'', श्री भुवनेश सिंह, उप प्रबंधक (परिकल्प–थर्मल), एनसीआर को ''उदय योजना–विद्युत क्षेत्र के सुधार में एक बड़ा कदम'', श्री आल्हा सिंह, अपर महाप्रबंधक (अमेलिया कोल माइन, सिंगरौली) को ''पृथ्वी में अधिकतम कितना गहरा गड्ढा खोदा जा सकता है'' एवं श्री नीलेन्द्र बहुगुणा, कनि. कार्यपालक (मा.सं.–प्रशासन), औषधालय, टिहरी को उनके लेख ''मानवता'' के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं एवं प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विजेता रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि कोविड–19 संक्रमण की वर्तमान परिस्थितियों में भी हिंदी पखवाड़ा के दौरान उक्त आयोजन ऑनलाइन/एसओपी के माध्यम से कराया गया जिसके लिए सभी यूनिटों/कार्यालयों के हिंदी अनुभाग बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही उन्होंने इस कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का अपनी ओर से पूर्ण प्रयास करें।

अंत में वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने ऑनलाईन माध्यम से जुडे सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं हिंदी पखवाड़ा के प्रतिभागियों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले विभागों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

टिहरी यूनिट

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते महाप्रबंधक (परि.–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार एवं अन्य अधिकारीगण

चल राजभाषा वैजयंती प्रदान करते महाप्रबंधक (परि.–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार एवं अन्य अधिकारीगण

टिहरी यूनिट में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया और 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह महाप्रबंधक (परियोजना–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार, महाप्रबंधक (नई परियोजनाएं), श्री सी.पी. सिंह, अपर–महाप्रबंधक (बांध एवं पावर हाउस), श्री राजीव गोविल, उप महाप्रबंधक (पर्यावरण), श्री सीमांत पंत, उप महाप्रबंधक (वित्त), श्री संदीप भटनागर, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), श्री डी.पी. भट्ट एवं प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कर रही श्रीमती नीरज सिंह, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी पखवाड़ा के पूरे कार्यक्रम के आयोजन पर प्रकाश डाला गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, हिंदी टंकण, हिंदी सुलेख, अनुवाद, वाद–विवाद एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना–पीएसपी) श्री एस.एस. पंवार, ने माननीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई एवं सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के कार्यान्वयन हेतु शपथ भी दिलाई। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की आदत डालना है। अतः इन प्रतियोगिताओं में अधिकाधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भाग लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्व में लगभग 120 करोड़ लोग हिंदी बोलते या समझते हैं, और 150 देशों में हिंदी का अस्तित्व है, जिसमें जर्मनी, मारीशस, नेपाल, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुयाना, न्यूजीलैंड, अफ्रीका एवं अमेरिका प्रमुख हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था "जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह कभी उन्नत नहीं हो सकता." इसी बात को अमेरिकी लेखक वाल्टर चौनिंग की भाषा में कुछ इस तरह बयान किया है "विदेशी भाषा में किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा का होना सांस्कृतिक दास्तान है"। इन दोनों विचारों में हिंदी की वर्तमान स्थिति झलकती है।

पखवाड़ा का समापन समारोह 28 सितंबर, 2021 को महाप्रबंधक (परियोजना–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें विजेता प्रतिभागियों को महाप्रबंधक (परियोजना–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार, महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री आर.आर. सेमवाल एवं अपर

महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री बी.के. सिंह, द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

निबंध प्रतियोगिता में श्री आशीष पाठक–प्रथम, श्री सौरभ द्विवेदी–द्वितीय, श्री आदित्य मिश्र–तृतीय एवं श्री वी.पी. एस. रावत, श्रीमती अमिता पंवार, श्रीमती अलका रानी, श्री शेर सिंह रावत ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में श्री शशांक लाल–प्रथम, श्री विजय प्रकाश भट्ट–द्वितीय, श्री मोहन सिंह श्रीस्वाल–तृतीय एवं श्री दीपक उनियाल, श्री आदित्य मिश्र, श्री सौरभ द्विवेदी, श्री अतुल कुमार ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

अनुवाद प्रतियोगिता में श्री नरेन्द्र कुमार जांगिड–प्रथम, श्री आदित्य मिश्र–द्वितीय, श्री सौरभ द्विवेदी–तृतीय एवं श्री अतुल कुमार, मोहित गोयल, यशवंत सिंह नेगी, श्री मयंक गुप्ता ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

सुलेख प्रतियोगिता में श्री डी.सी. भट्ट–प्रथम, श्री तेजेंद्र रावत–द्वितीय, श्री वी.पी.एस. रावत–तृतीय एवं श्री यशवंत सिंह नेगी, श्री मोहन सिंह श्रीस्वाल, श्रीमती अमिता पंवार, श्री नरेन्द्र कुमार जांगिड ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

टंकण प्रतियोगिता में श्री विजय कुमार–प्रथम, श्री मोहित गोयल – द्वितीय, श्री यशवंत सिंह नेगी – तृतीय एवं श्री आदित्य मिश्र, श्री राज कुमार, श्री धीरज पाल सिंह नेगी, श्री मयंक गुप्ता ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्री सौरभ द्विवेदी–प्रथम, श्री अतुल कुमार–द्वितीय, श्री आशीष पाठक–तृतीय एवं श्री नीलेंद्र बहुगुणा, श्री वी.पी.एस. रावत, श्री तनुज सिंह राणा, श्री हिमांशु तिवारी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था, जिसमें विजेता प्रतिभागियों को उसी समय प्रति प्रश्न के सही उत्तर देने पर नगद पुरस्कार प्रदान किए गए।

इसके अलावा राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2020–21 के दौरान राजभाषा हिंदी में सबसे अधिक कार्य करने के लिए राजभाषा चल वैजयंती ट्राफी प्रदान की गई, जिसमें प्रथम ट्रॉफी विद्युत विभाग एवं द्वितीय स्पिलवे विभाग को प्रदान की गई।

इस अवसर पर श्री मनोज कुमार सिंह, अपर महाप्रबंधक, यांत्रिक, श्री राजीव गोविल, अपर महाप्रबंधक, पावर हाउस, श्री अभिषेक गौड़ अपर महाप्रबंधक, बीआरएम, अपर–महाप्रबंधक (गुणवत्ता नियंत्रण) श्री दीपक कुमार, अपर–महाप्रबंधक (विद्युत), श्री वी.के. शर्मा, श्री संदीप भटनागर, उप महाप्रबंधक, वित्त, श्री डी.सी. भट्ट, वरिष्ठ प्रबंधक, श्री एस.बी. प्रसाद, वरि. प्रबंधक, श्री मोहन सिंह, प्रबंधक, श्री शशांक लाल, प्रबंधक, श्री दीपक उनियाल, उप प्रबंधक श्री मनबीर नेगी, उप प्रबंधक एवं सभी प्रतिभागी सहित बड़ी संख्या में टीएचडीसी के कार्मिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री मनबीर नेगी, उप प्रबंधक (जनसंपर्क) द्वारा किया गया।

विजेता अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कृत करते महाप्रबंधक (परि.–पीएसपी), श्री एस.एस. पंवार एवं अन्य अधिकारीगण

गुणवत्ता युक्त शिक्षा हमें अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ लड़ने की क्षमता प्रदान करती है – **चार्ल्स बी रंगेल**

कोटेश्वर यूनिट

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते महाप्रबंधक (परि.), श्री ए.के. घिल्डियाल एवं अन्य

कोटेश्वर हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट, कोटेश्वरपुरम में दिनांक 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया एवं इसी दिन से 28 सितंबर तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि श्री ए.के. घिल्डियाल, महाप्रबंधक (परियोजना) ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय गान के उपरांत श्री एच. के. जिंदल, अपर महाप्रबंधक ने गृहमंत्री भारत सरकार का हिंदी दिवस संदेश पढ़कर सुनाया एवं श्री ए.के. घिल्डियाल, महाप्रबंधक (परियोजना) ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का हिंदी दिवस संदेश पढ़कर सुनाया तथा सभी विभागाध्यक्षों एवं उपस्थित कर्मचारियों को हिंदी दिवस की प्रतिज्ञा दिलवाई।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान निगम के कार्मिकों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता तथा स्वरचित कविता पाठ आदि आयोजित की गई।

पखवाड़ा समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक(परियोजना), श्री अनिल कुमार घिल्डियाल ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे सभी कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान किए।

टिप्पण एवं आलेखन में श्री कीर्ति अरोड़ा, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)–प्रथम, श्री एन.एन. ध्यानी, वरि. प्रबंधक (नियोजन)–द्वितीय, श्री सोहन लाल जायसवाल, प्रबंधक (सुरक्षा)–तृतीय रहे। साथ ही श्री एस.सी. गुप्ता, वरि. प्रबंधक (नियोजन) एवं श्री आर.डी. ममगाई, उप प्रबंधक (मा.सं.) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

निबंध प्रतियोगिता में श्री सोहन लाल जायसवाल, प्रबंधक (सुरक्षा)–प्रथम, श्री कमलेश्वर प्रसाद भट्ट, वरि. सहा. (नियोजन)–द्वितीय, श्री पुरूषोत्तम सिंह, रावत उप प्रबंधक (सुरक्षा) – तृतीय रहे। साथ ही श्री जयवीर सिंह राणा, वरि. लेखाधिकारी (वित्त) एवं श्री वचन सिंह भंडारी, कार्य सहायक (नियोजन) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

अनुवाद प्रतियोगिता में श्री शिव प्रसाद बेलवाल, वरि. सहायक (मा.सं.)–प्रथम, श्री पुरूषोत्तम सिंह रावत, उप प्रबंधक (सुरक्षा)–द्वितीय, श्री कमलेश्वर प्रसाद भट्ट, वरि. सहायक (नियोजन)–तृतीय रहे। साथ ही श्री कुवंर सिंह पंवार, कनि. कार्यपालक (वित्त) एवं श्री राजपाल आर्य, सहायक (सुरक्षा) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

टंकण प्रतियोगिता में श्री के. पी. भट्ट, वरिष्ठ सहायक, नियोजन–प्रथम, श्री दयालसिंह, सहायक (टंकक), नियोजन–द्वितीय, श्री दौलत सिंह नेगी, वरि.अधि. (ईडीपी)–तृतीय रहे। साथ ही श्री एस.एस. रांगड़, अधिकारी (मा.सं.) एवं कु. मनीषा उनियाल, प्रशिक्षु (बीएंडआर) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

स्वरचित कविता पाठ में श्री सिद्धार्थ कौशिक, उप प्रबंधक, म.प्र.(परि.)–प्रथम, श्री पुरूषोत्तम सिंह रावत, उप प्रबंधक (सुरक्षा) –द्वितीय, श्री गणेश मिश्रा, वरि. प्रबधक (ओएंडएम)–तृतीय रहे। साथ ही श्री सिद्धीराम पेटवाल, कार्य सहायक (बांध) एवं श्री विकास डंगवाल, वरि. तकनीशियन (विद्युत) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

मूलरूप से हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन के लिए श्री विवेक बडोनी, वरि. प्रबंधक (वित्त) एवं श्री महेश कुमार उनियाल, वरि. सहायक (विद्युत) ने प्रथम,

श्री बी.एस. नकोटी, वरि. प्रबंधक (ओएंडएम), श्री एस. एस. नेगी, वरि. प्रबंधक (सीएंडएमएम) एवं श्री सुधीर पुरोहित, वरि. प्रबंधक (मा.सं.) ने द्वितीय तथा श्री एस. एस. रांगड़, अधिकारी (मा.सं.), श्री गिरीश उनियाल, उप प्रबंधक (मा.सं.), श्री राजपाल आर्य, सहायक (सुरक्षा), श्री आर.डी. ममगाई, उप प्रबंधक (मा.सं.) एवं श्री कमलेश्वर प्रसाद भट्ट, वरि.सहा. (नियोजन) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

विजेता विभाग को शील्ड प्रदान करते महाप्रबंधक (परि.), श्री ए.के. घिल्डियाल एवं अन्य अधिकारीगण

कार्यालयों में वर्ष के दौरान हिंदी के कार्यों में समन्वय एवं सहयोग के लिए श्री दौलत सिंह नेगी, वरि. अधि. (ईडीपी) मा.सं., श्री राजेश चंद्र थपलियाल, फार्मासिस्ट, श्री अंगद पाल, वरि. प्रबंधक (यांत्रिक), श्री एम.एल. बिजल्वाण, अधिकारी (बीएंडआर), श्री दुर्गा प्रसाद बिजल्वाण, सहायक (मा.सं.), श्री शिवपाल सिंह, वरि. सहायक (यांत्रिकी), श्री प्रकाश चंद्र चमोली, अधिकारी (अतिथि गृह), श्री राजेन्द्र प्रसाद बेलवाल, वरि. आशु. म.प्र. (परि.), श्री बी.एस. पुण्डीर, उप महाप्रबंधक (ओ. एंड एम.) को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

अनुभागाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष द्वारा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु श्री हिमांशु चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक (वित्त) ने प्रथम, श्री नेलसन लाकड़ा, उप महाप्रबंधक (एचआर) ने द्वितीय एवं श्री एच. के. जिंदल, अपर महाप्रबंधक (नियोजन) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने वाले कार्यपालकों के लिए श्री विजय बहुगुणा, वरि. प्रबंधक (विद्युत) ने प्रथम श्री एस. एस. नेगी वरि. प्रबंधक (सीएंडएमएम) ने प्रथम, श्री पुरुषोतम रावत, उप प्रबंधक (सुरक्षा) एवं श्री बी.डी. बहुगुणा, वरि. लेखाकार (वित्त) ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना) ने कहा कि सभी विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा के कार्यान्वयन एवं मातृभाषा के प्रति सम्मान प्रकट करने का सबसे बेहतर तरीका यही है कि हम अपना संपूर्ण सरकारी कामकाज हिंदी में करने का प्रयास करें और इस संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा निगम मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने का भरसक प्रयास करें। पुरस्कार वितरण समारोह में महाप्रबंधक (परियोजना) ने परियोजना स्तर में वर्ष 2020–21 के दौरान हिंदी पत्राचार में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों को चल वैजयंती ट्राफी महाप्रबंधक (परियोजना) कार्यालय एवं रनर ट्राफी नियोजन विभाग को प्रदान की।

समापन कार्यक्रम में परियोजना के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों में श्री डी.के. त्यागी, अपर महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री एच.के. जिंदल, अपर महाप्रबंधक (नियोजन), श्री हिमांशु चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक (वित्त), श्री बलबीर सिंह पुण्डीर, उप महाप्रबंधक (ओ. एण्ड एम.), श्री नेलसन लाकड़ा, उप महाप्रबन्धक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं श्री एस.एस. नेगी, वरिष्ठ प्रबन्धक, श्री एच.पी. भट्ट, वरिष्ठ प्रबन्धक आदि अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री डी.एस. रावत ने किया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते अपर महाप्रबंधक (प्रभारी), श्री नीरज वर्मा

हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिता का दृश्य

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में दिनांक 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस मनाया गया एवं हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नीरज वर्मा, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री नीरज वर्मा ने अपने संबोधन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने एनसीआर कार्यालय के कर्मचारियों से हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता सुनिश्चित करने की अपील की। इस अवसर पर श्री वर्मा ने सभी उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी की गई राजभाषा प्रतिज्ञा कराई गई।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान 15 सितंबर, 2021 को निबंध प्रतियोगिता, 17 सितंबर, 2021 को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 20 सितंबर, 2021 को अनुवाद प्रतियोगिता एवं 22 सितंबर, 2021 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 28 सितंबर, 2021 को हिंदी पखवाड़ा का समापन हर्षोल्लास के साथ किया गया। समारोह में कारपोरेट कार्यालय से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुसार प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को श्री नीरज वर्मा, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी) के कर–कमलों से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक (प्रभारी) ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के सफलतापूर्वक आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया और अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने के लिए उनकी सराहना की। अपर महाप्रबंधक महोदय ने कहा कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2020–21 के अनुपालन में ''क'' एवं ''ख'' क्षेत्र के कार्यालयों के साथ हिंदी पत्राचार का प्रतिशत शत–प्रतिशत होना चाहिए।

खुर्जा सुपर थर्मल पावर प्लांट

हिंदी पखवाड़ा आयोजन का दृश्य

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के केएसटीपीपी, खुर्जा में विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी दिनांक 14 सितंबर, 2021 से 28 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान राजभाषा से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित की गयी। 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया और हिंदी पखवाड़ा 2021 का शुभारंभ किया गया। हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ पर अपर महाप्रबंधक (पर्यावरण), श्री डी.वी. शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर परियोजना के सभी कर्मचारियों के समक्ष अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा जारी की गयी अपील पढ़ी गई तथा समस्त कर्मचारियों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी की गयी राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई गई। हिंदी पखवाड़ा 2021 के अंतर्गत परियोजना के समस्त कार्मिकों हेतु निबंध प्रतियोगिता, नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता तथा श्रुतलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत मूल रूप से सर्वाधिक काम करने वाले परियोजना के अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया। हिंदी पखवाड़ा में परियोजना के कार्मिकों ने सभी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता की।

15 सितंबर, 2021 को राष्ट्र के एकीकरण में राष्ट्रभाषा की भूमिका विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें श्री रवि कुमार गुप्ता, वरि.अभि., सुश्री प्रियंका, उप प्रबंधक, श्री शाहिद अनवर, उप प्रबंधक प्रथम रहे। श्री एस.एस.पटवाल, प्रबंधक, सुश्री प्रज्ञा व्यास, वरि. अभियंता एवं श्री अरविंद कुमार, प्रबंधक ने द्वितीय पुरस्कार जीता। श्री ए.के.भारतीय, वरि.अभियंता, श्री धीरेन्द्र कुमार, वरि. अभियंता एवं श्री राहुल मेकला, वरि. अभि. ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। श्री पवन कुमार, अवर अभियंता ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। 16 सितंबर, 2021 को टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सुश्री प्रियंका, उप प्रबंधक, श्री शुभेंदु शेखर साहू, वरि. अभियंता एवं श्री मनीष बकोलिया, उप प्रबंधक प्रथम रहे। श्री शाहिद अनवर, उप प्रबंधक, सुश्री नयन रतूड़ी, उप प्रबंधक एवं श्री अरविंद कुमार, प्रबंधक ने द्वितीय पुरस्कार जीता। श्री धीरेन्द्र कुमार, वरि. अभियंता ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

17 सितंबर, 2021 को श्रुत लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें श्री शाहिद अनवर, उप प्रबंधक, सुश्री नयन रतूड़ी, उप प्रबंधक, श्री रवि कुमार गुप्ता, वरि.अभि. प्रथम रहे। श्री ए.के. भारतीय, वरि. अभियंता, श्री मनीष बकोलिया, उप प्रबंधक, श्री एस.एस. पटवाल, प्रबंधक ने द्वितीय पुरस्कार जीता। तृतीय स्थान पर सुश्री प्रज्ञा व्यास, वरि. अभियंता, सुश्री प्रियंका, उप प्रबंधक, श्री अरविंद कुमार, प्रबंधक रहे। सांत्वना पुरस्कार श्री शुभेंदु शेखर साहू, वरि. अभियंता, श्री धीरेन्द्र कुमार, वरि. अभियंता, श्री एच.एस. चौहान, अभियंता एवं राहुल मेकला, वरि. अभियंता ने जीता।

मूल रूप से हिंदी में कामकाज करने वाले कर्मचारियों श्री एच.एस. चौहान, अभियंता एवं सुश्री प्रज्ञा व्यास, वरि. अभियंता ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सुश्री प्रियंका, उप प्रबंधक एवं श्री शाहिद अनवर, उप प्रबंधक एवं श्री सुदेश गोरा, उप प्रबंधक ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। 28 सितंबर को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्री कुमार शरद, महाप्रबंधक परियोजना के कर कमलों से विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

विजेता अधिकारियों को पुरस्कृत करते महाप्रबंधक (परियोजना), श्री कुमार शरद

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते कार्यपालक निदेशक, श्री आर.एन. सिंह व अन्य अधिकारी

विष्णुगाड पीपलकोटी जल विद्युत परियोजना, पीपलकोटी में 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यपालक निदेशक (परियोजना), श्री आर.एन. सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में वीपीएचईपी परियोजना के सभी विभागाध्यक्ष, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई की हिंदी दिवस पर जारी अपील पढ़ी गई और राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा की शपथ ली गई। हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी निबंध, हिंदी टंकण, टिप्पण एवं आलेखन, हिंदी वर्ग पहेली, राजभाषा एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शामिल हैं। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड–19 के तहत जारी दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए किया गया। हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 28.09.2021 को किया गया जिसमें उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने अपने कर कमलों से विजेताओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन जे.पी. सकलानी, प्रबंधक (मा.सं. एवं विधि) द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का दृश्य

संपादक के नाम पाती

सेवा में, श्री पंकज कुमार शर्मा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश

आदरणीय महोदय, 'पहल अंक–28 प्राप्त हुआ। श्री शिवराज चौहान का पर्यावरण विषयक तकनीकी आलेख 'विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन'; श्री हरीश चंद्र उपाध्याय का आलेख 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' तथा श्री विष्णु भूषण मिश्रा का शिक्षा संबंधी आलेख 'किस क्षेत्र/परिवार के लोग श्रेष्ठ पुरूष होते हैं' अत्यंत प्रशंसनीय है। श्री सतेन्द्र सिंह कुंवर का यात्रा–वृत्तांत 'रूद्रनाथ और लालभाटी का सफर' तथा श्रीमती नीलम चमोली का यात्रा–संस्मरण 'मां विंध्यवासिनी मंदिर दर्शन' अत्यंत रोचक है। निश्चित रूप से साहित्य की सभी विधाओं में यात्रा–संस्मरण का लेखन सर्वाधिक परिश्रमजन्य है। इसमें देशकाल, वातावरण तथा संवाद के माध्यम से पाठक के साथ तारतम्य स्थापित रखना पड़ता है। राजभाषा पत्रिकाओं में यात्रा संस्मरण काफी कम पढ़ने को मिलते हैं। 'पहल' द्वारा इनको निरंतर रूप से प्रकाशित करना उत्कृष्टता का परिचायक है। अनुरोध है कि यह स्तंभ नियमित रूप से प्रकाशित होते रहना चाहिए। पत्रिका में प्रकाशित कविताओं के रचनाकारों ने भी सशक्त रचनाधर्मिता का परिचय दिया है। अनुकरणीय प्रकाशन के लिए संपादन समिति के सभी सदस्यों का प्रयास स्तुत्य है। शुभकामनाओं सहित,

कृते इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
डॉ. राजनारायण अवस्थी
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला में उपस्थित प्रमुख अतिथिगण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के तत्वावधान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के सौजन्य से सदस्य संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 08 सितंबर, 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया।

सर्वप्रथम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के प्रोफेसर श्री नागेन्द्र कुमार ने संकाय सदस्य, श्री अजय मलिक एवं नराकास सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा एवं उपस्थित समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया। नराकास हरिद्वार के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के आयोजनकर्ता संस्थान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की का कार्यशाला के आयोजन हेतु आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस माह सदस्य संस्थानों में हिंदी दिवस का आयोजन एवं हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी माह कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अपेक्षा है कि इन कार्यक्रमों के दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी जाए। इसी उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आमंत्रित संकाय सदस्य श्री अजय मलिक जी के द्वारा व्याख्यान देना वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि श्री मलिक राजभाषा विभाग के साथ लंबें समय तक जुड़े रहे। हमें अपने कार्यालय के कार्य में उनके अनुभव से सीखकर राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री अजय मलिक ने अपने व्याख्यान में राजभाषा नीति, राजभाषा अनिधियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 पर बहुत सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए गए प्रावधानों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को सही रूप में द्विभाषी जारी करने की जानकारी दी। उन्होंने राजभाषा विभाग के द्वारा जारी कार्यालय ज्ञापनों का उल्लेख करते हुए कहा कि यह देखा गया है कि दस्तावेज मूल रूप से अंग्रेजी में जारी किए जाते हैं और उसके बाद आवश्यकतानुसार उनका हिंदी अनुवाद तैयार किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप पत्र का अभिप्राय ही समझ में नहीं आता और उसका आशय देखने के लिए अंग्रेजी संस्करण का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि ऐसे कर्मचारी जो हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है उनके द्वारा धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले कागजात एवं राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत जारी किए जाने वाले पत्र अनिवार्य रूप से मूल रूप से हिंदी में तैयार किए जाएं और ऐसे कर्मचारी जो कार्यसाधक ज्ञान रखते हों, वे यथासंभव सीमा तक ऐसे दस्तावेजों एवं पत्रों को मूल रूप से हिंदी में तैयार करें तथा आवश्यकतानुसार उनका अंग्रेजी अनुवाद कराया जाए। साथ ही उन्होंने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को राजभाषा से संबंधित रिपोर्टिंग प्रणाली एवं अनेक अन्य ज्ञानप्रद जानकारी दी।

चर्चा सत्र में अनेक कर्मचारियों ने श्री मलिक से उपर्युक्त विषय पर विभिन्न प्रश्न किए जिनका श्री मलिक ने समाधान किया । कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश के 42 अधिकारियों के साथ–साथ नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कुल मिलाकर 86 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला के अंत में प्रो. नागेन्द्र कुमार ने श्री अजय मलिक के साथ–साथ सभी उपस्थित प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

एक आदमी की शिक्षा मरने तक पूरा नहीं होती है – **रॉबर्ट ई.ली.**

द्वितीय कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के आयोजन का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 17 दिसंबर, 2021 को वीपीएचईपी, पीपलकोटी एवं एसटीपीपी, खुर्जा परियोजनाओं के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर ऋषिकेश में कार्यरत संविदा कर्मचारियों हेतु भी ऑफलाइन मोड में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्था./हिंदी), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा ने की। प्रारंभ में कनि. अधिकारी(हिंदी) श्री नरेश सिंह ने उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्था./हिंदी) श्री ईश्वरदत्त तिग्गा एवं वीपीएचईपी, पीपलकोटी परियोजना से ऑनलाइन जुड़े उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस.के. शर्मा तथा एसटीपीपी, खुर्जा परियोजना से जुड़े उप महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) श्री मुकेश वर्मा तथा सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला की उपयोगिता के बारे में बताया।

कार्यशाला में मुख्य संकाय सदस्य श्री पंकज कुमार शर्मा द्वारा सर्वप्रथम ऑनलाइन जुड़े पीपलकोटी एवं खुर्जा परियोजना के कार्यपालकों को राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक हिंदी कार्यक्रम एवं लक्ष्यों के बारे में बताया। उन्हें यूनिटों की ओर से भरी जाने वाली तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट को भरने के बारे में विस्तार से बताया तथा प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया।

इसके पश्चात सम्मेलन कक्ष में उपस्थित संविदा कर्मचारियों को दिए गए अभ्यास कार्य का जायजा लिया। उन्हें यूनिकोड मंगल फोंट को कम्यूटर में इनेबल करने तथा टाइप करने तथा साथ ही वाइस टाइपिंग के बारे में भी विस्तार से बताया गया।

कार्यशाला में वीपीएचईपी, पीपलकोटी एवं एसटीपीपी, खुर्जा परियोजना से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। कारपोरेट कार्यालय से 27 संविदा कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। चर्चा सत्र में पीपलकोटी, खुर्जा परियोजना तथा ऋषिकेश कार्यालय के प्रतिभागियों ने कहा कि यह कार्यशाला कार्यालय के रोजमर्रा के कामकाज में काफी उपयोगी साबित होगी। अंत में वरि. हिंदी अधिकारी श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्था./हिंदी), ऋषिकेश तथा उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), पीपलकोटी एवं खुर्जा का कार्यशाला में समय देने के लिए आभार व्यक्त किया एवं समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

टिहरी यूनिट

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के आयोजन का दृश्य

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी के तत्वावधान में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के सौजन्य से 23 जुलाई, 2021 को सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री बी.के. सिंह के संबोधन के साथ हुआ। श्री सिंह ने अपने संबोधन में राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम

सभी ''क'' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त सरकारी कार्य हिंदी में ही करें। हमें राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुपालन में अपने कार्यालयीन कार्य शत–प्रतिशत हिंदी में करते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के प्रबंधक (हिंदी) एवं संकाय सदस्य श्री इन्द्रराम नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी पत्राचार के विविध स्वरूप, राजभाषा अधिनियम एवं नियम तथा मानक शब्दावली का प्रयोग करने पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस कार्यशाला में नराकास, टिहरी के 30 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रबंधक (हिंदी), श्री नेगी ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

द्वितीय कार्यशाला

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ करते अधिकारीगण

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में 03 दिसंबर, 2021 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफ़ेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक, डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी एवं प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक, डॉ. ए. एन. त्रिपाठी ने राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफ़ेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य तथा कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा राजभाषा नीति–नियम, कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 25 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री अमित प्रकाश का स्वागत करते अपर महाप्रबंधक (प्रभारी), श्री नीरज वर्मा

एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी में 17 सितंबर, 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने व्याख्यान से अधिकारियों व कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के शुभारंभ पर श्री अमित प्रकाश का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंटकर किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अपर महाप्रबंधक (प्रभारी), श्री नीरज वर्मा एवं अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन/वाणि.), श्री आर. एस तोमर उपस्थित थे।

श्री अमित प्रकाश ने अपने व्याख्यान में राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। कार्यशाला के समापन के अवसर पर श्री आर. एस. तोमर, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन/वाणि.) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हम सबको राजभाषा हिंदी में कार्य करने के संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हुए हिंदी पत्राचार के शत प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास सदैव करते रहना चाहिए। कार्यशाला में 15 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के आयोजन में कोविड–19 प्रोटोकॉल का पालन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय की

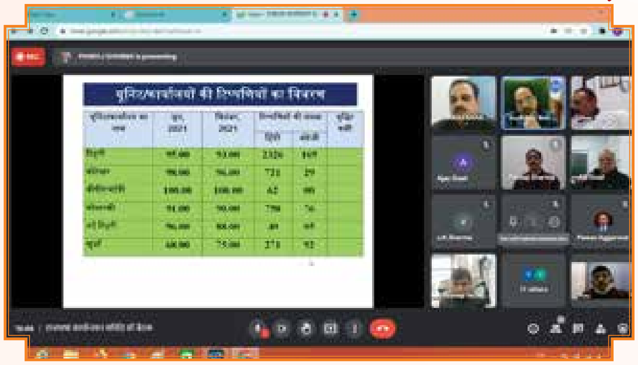

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते श्री जे. बेहेरा, निदेशक (वित्त) एवं उपस्थित सदस्यगण

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 20 दिसंबर, 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन निदेशक (वित्त), श्री जे. बेहेरा की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने विभागों/अनुभागों/यूनिट एवं कार्यालयों से प्राप्त हुई हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की तथा पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुपालन कार्रवाई एवं भावी लक्ष्यों के बारे में भी जानकारी दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि सभी विभाग/अनुभाग, यूनिट एवं कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के निर्धारित प्रतिशत को पूरा करने का पूर्ण प्रयास करें। अनेक विभाग इस ओर अच्छा प्रयास कर रहे हैं परंतु अभी भी कुछ विभागों को ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ऐसे अनेक टूल्स विकसित हो गए हैं जिनका प्रयोग कर हिंदी में आसानी से कार्य किया जा सकता है।

संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय के द्वारा एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का राजभाषा निरीक्षण

श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का राजभाषा निरीक्षण किया। कौशांबी कार्यालय के वरि. अधिकारी (मा.सं.), श्री रोहित जोशी एवं वरि. हिंदी अनुवादक, श्री आशीष जैन ने निरीक्षण में सहयोग करते हुए निरीक्षण संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत किए। श्री अमित प्रकाश ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेजों, हिंदी में प्राप्त पत्रों के हिंदी में उत्तर देने, अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देने, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन संबंधी दस्तावेजों का अवलोकन किया। श्री अमित प्रकाश के साथ विद्युत मंत्रालय के अधिकारी, श्री सत्यवीर भी उपस्थित थे ।

संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री अमित प्रकाश राजभाषा निरीक्षण के दौरान दस्तावेजों का अवलोकन करते हुए

टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोसिएशन ने भी मनाया हिंदी दिवस

पुरस्कार वितरण का दृश्य

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश में टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोसिएशन ने हिंदी के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए एवं जागरूकता प्रदर्शित करते हुए गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस मनाया।

इस अवसर पर आफिसर्स क्लब में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी व्याकरण, सामान्य हिंदी, अंग्रेजी के शब्दों के हिंदी पर्याय आदि पर प्रश्न पूछे गए।

प्रतियोगिता में 70 से अधिक महिला सदस्यों ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर उपस्थित एसोसिएशन की संरक्षिकाओं श्रीमती चंचल विश्नोई और श्रीमती संगारिका बेहरा एवं श्रीमती पूनम अग्रवाल ने सभी विजेता प्रतिभागी सदस्याओं को अपने कर–कमलों से पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में एसोसिएशन की अध्यक्ष, श्रीमती रेणु सिंघल, सलाहकार, श्रीमती शालिनी सिंघल, उपाध्यक्ष, श्रीमती नीलम जैन, सचिव, श्रीमती निर्मल त्यागी, कोषाध्यक्ष, श्रीमती कल्पना यादव, सांस्कृतिक सचिव, श्रीमती स्वाति गर्ग एवं स्पोर्ट्स सचिव, श्रीमती कुसुमरानी ने अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया।

हास-परिहास

ट्रेन में रेलवे टीटी– बाबा कहां जाना है ?
बाबा– जहां राम का जन्म हुआ था।
टीटी– टिकट दिखा दो बाबा।
बाबा– नहीं है बालक।
टीटी– तो चलो,
बाबा– कहां बालक ?
टीटी– जहां भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था।

महेश– खाली पेपर को बार–बार चूम रहा था...
रमेश– यह क्या है?
महेश– मेरी महबूबा है।
रमेश– मगर ये तो खाली पेपर है।
महेश– हां, आजकल बोलचाल बंद है।

चिंटू– सर टी–शर्ट अच्छी लग रही है आप पर।
बॉस– छुट्टी नहीं मिलेगी।
चिंटू– सर सिर्फ टी–शर्ट अच्छी लग रही है,
मुंह वैसा ही है जैसा है।

नौकरानी–मैडम जी, मैंने आपको जलते मकान से निकालकर आपकी जान बचाई थी, इसलिए एक हजार रुपये दीजिए।
मैडम–यह लो पांच सौ रुपये।
नौकरानी–पाँच सौ ही क्यों ?
मैडम–क्योंकि उस वक्त मैं अधमरी थी।

टिक्कू–मिक्कू से– पूरी जिंदगी निकली जा रही है इसी इंतजार में, कभी कोई टीचर मिलेगा तो एक बात उनसे जरूर पूछूंगा।
मिक्कू – क्या ?
टिक्कू–ये साइन थीटा, कॉस थीटा और टैन थीटा का यूज लाइफ में कब और कैसे करना है ?

सुकेश अपनी गर्लफ्रेंड को लेकर रेस्टोरेंट में डिनर कराने गया ।
सुकेश– बोलो बेबी, क्या मंगाऊं ?
गर्लफ्रेंड– मेरे लिए तो पिज्जा मंगा लो और अपने लिए एम्बुलेंस मंगा लो ।
सुरेश–अरे एम्बुलेंस क्यों ?
गर्लफ्रेंड–पीछे देखो तुम्हारी बीवी खड़ी है।

पिंकी के पिता–क्यों बेटे, तुम किस खानदान से हो।
लड़का–जानवरों के खानदान से।
पिंकी के पिता–मतलब ?
लड़का–जी मेरे पिता जी मुझे गधा कहते हैं, मम्मी कुत्ता कहती है, बहन मुझे बंदर कहकर चिढ़ाती है, टीचर मुझे सूअर कहते हैं, और मेरे दादा जी कहते हैं–वाह मेरे बब्बर शेर।

पति ने पत्नी से बड़े ही प्यार से कहा – काश तुम शक्कर होती, कभी तो मीठा बोलती...
पत्नी– काश तुम अदरक होते, कसम से... जी भर के कूटती...!!!

पंडित जी ने पप्पू का हाथ देखा और बोले –
बेटा तुम बहुत पढ़ोगे।
पप्पू– पंडित जी मैं तो पढ़ पांच साल से रहा हूं,
ये बता दो कि पास कब होऊंगा।

कर्मचारी फोन पर बॉस से– सर, खूब बारिश हो रही है, क्या आज ऑफिस आना है ?
बॉस (फोन पर ही)– खुद ही डिसाइड कर लो, तुमको किससे बेइज्जती करवानी है दिन भर, मेरे से या पत्नी से...?
कर्मचारी– ठीक है सर, मैं आ रहा हूँ।

रामायण देखते हुए, बेटा– पापा, राजा दशरथ की तीन रानियां थीं, लेकिन मेरी तो एक ही मम्मी है।
पापा– हां बेटा, काश मेरी भी तीन पत्नियां होती।
अंदर से मम्मी की आवाज आयी, अभी बारह बजे इसे महाभारत दिखाऊंगी जिसमें द्रोपदी के 5 पति थे। एकदम सन्नाटा छा गया...

एक महिला का दामाद बहुत ही काला था ।
सास– दामाद जी आप तो एक महीना यहां रुको दूध, दही खाओ, मौज करो, आराम से रहो यहां।
दामाद– अरे वाह सासु मां आज बड़ा प्यार आ रहा है मुझ पे ।
सास– अरे प्यार व्यार कुछ नहीं कलमुहे वो हमारी भैंस का बच्चा मर गया, कम से कम तुम्हें देखकर दूध तो देती रहेगी।

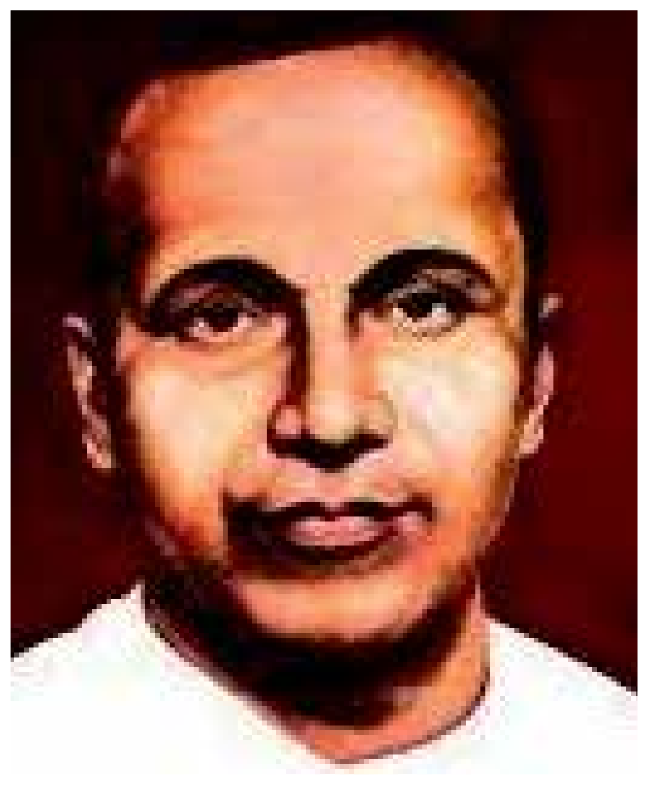

वह पथ क्या,
पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर
बिखरे शूल न हों !
नाविक की
धैर्य परीक्षा क्या,
जब धाराएं प्रतिकूल न हों..!!

जयशंकर प्रसाद
(30 जनवरी, 1889 - 15 नवंबर, 1937)

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी द्वारा टीएचडीसीआईएल के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)